

# RABIUL ISLAM

## लव

ओर

## कोम्प्रोमाईज़

क्या जिस्म की चाहत में आज प्यार बदनाम हो गया?

A romantic couple is shown in silhouette against a warm, golden sunset background. The man is on the left, leaning in to kiss the woman on the cheek. The woman is on the right, her face partially visible in profile. The overall mood is intimate and affectionate.

# RABIUL ISLAM

# লব

১০

आर

# कोम्प्रोमाईज़

क्या जिस्म की चाहत में आज प्यार बदनाम हो गया?

## लव ओर कोम्प्रोमाईज़

© 2018 रबीउल इस्लाम

एडिटर श्रीकांत पांडेय

रबीउल इस्लाम द्वारा यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसे व्यवसाय अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंद या खुले किसी भी रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का अधिक रूप में पुनः प्रकाशन या पुनः प्रकाशनार्थ अपने रेकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने की प्रति अपनाने, इसका अनुदित रूप तैयार करने अथवा इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखनेवाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पुर्बानुमति लेना अनिवार्य है।

ये कहानी लेखक की कल्पना है, नाम, पात्र, स्थान और घटनाएं लेखक की कल्पना का उत्पाद हैं, इस कहानी को काल्पनिक रूप से ही पढ़ी जानी चाहिए, किसी भी वास्तविक व्यक्ति, जीवित या मृत, घटनाओं, या स्थानीय लोगों के साथ इस कहानी का कोई ताल्लुक नहीं है।

Email id : irabiul853@gmail.com

लेखक के बारे में दो शब्द,

पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गांव "फारस पुर" के रहने वाले रबीउल इस्लाम, जो खुली आँखों में सपनें देखा करते थे, और अपने सपनों को हकीकत में बदलने के लिए रबीउल ने कलम उठाया, और अपने सपने को शब्द देकर "लव ओर कोम्प्रोमाईज़" के ज़रिए आप तक पहुँचाया, और आपने रबीउल के इस सपने के सफ़र को साकार करने का मौक़ा दिया, इसके लिए आभार।

ख़ुदा ने हमें इतनी ख़ूबसूरत ज़िंदगी दी है, बदले में वो हमसे क्या मंगा है? ख़ुशियों से भारी हमारी ज़िंदगी, हम सदा ख़ुश रहें, हमारे ज़िंदगी में कभी ख़ुशियों की कमी न हो, माँ. बाप. भाई. बहन. और भी कई सारे रिश्ते प्रदान किये हैं उन्होंने हमें, उन रिश्तों के लिए हमारे दिल में सदा प्यार मुहब्बत हो, और वो प्यार मुहब्बत हमें एक दूसरे के साथ रखे, हम हमेशा-हमेशा के लिए एक दूसरों की सहारा बने रहें, यही चाहता है, और इसके लिए उन्होंने हमें संस्कृति के नाम पर इतनी ख़ूबसूरत तोहफ़ा दिया है, हमें सिर्फ़ संस्कृति को साथ लेकर चलना है, और सच्ची ख़ुशी के करीब और साइंस के बनाये हुए नामली ख़ुशी से दूर रहना है।

एक बेटी, जब वो चार दिन की इस दुनिया में अति है तो उसे इस दुनिया के बारे में कुछ पता नहीं रहता है, उसे सिर्फ़ इतना पता रहता है कि हमें खेलकूद करना है और शाम को घर आकर माँ-बाप से डांट खाना है, और अगर ज़्यादा बदमाशियां करें तो माँ के हाथों से मार खाना है, इससे ज़्यादा उसे कुछ पता नहीं रहता है। फिर माँ धीरे-धीरे उसे इस दुनिया के बारे में बताती है, उसे संस्कृति देती है। फिर

जब वो थोड़ी बड़ी हो जाती है तो उसे पता चलता है कि वो कुछ दिन के लिए अपने माँ-बाप के घर पर मेहमान है, एक दिन उसे अपने माँ-बाप को छोड़कर जाना है और दूसरों की घर बसाना है। और एक दिन वही होता है, सारे रिश्ते नाते. सारे बंधन छोड़कर उसे किसी अजनबी के साथ जाकर उसकी घर सजाना पड़ता है।

एक पत्नी, क्या चाहती है ज़िंदगी से? अपनी पिता: की तरह एक अच्छा पति, जो नेक हो, ईमानदार हो, मेहनती हो, और ये सारी खूबियां जिसकी पति के अंदर होते हैं उसकी पत्नी को ज़िंदगी से और कुछ नहीं चाहिए होते हैं, उसकी पति उसकी पिता: की तरह ईमानदारी से मेहनत करके अपने घर को चलता है, और पत्नी अपनी माँ की तरह, अपने बच्चों को संस्कार और संस्कृति देकर अपनी भविष्य को आगे बढ़ाते हैं, बाकायदा सारी खुशियां भी उनकी परिवार में बरकरार रहता है।

लेकिन कभी-कभी ऐसा नहीं हो पाता है, पत्नी को दिखने में खूबसूरत पति तो मिल जाते हैं, लेकिन अंदर से वो खोखले होते हैं, जिसका सबसे बड़ा कमी वो मेहनत करने से डरते हैं, अब सवाल ये है कि बिना मेहनत करके इनकम करने वाले ये इंसान कहाँ से आया है? ऑफिसली ये उन्हीं माँ-बाप का वंश है जिन माँ-बाप के पास संस्कृति की कमी है सभ्यता की कमी है ज्ञान की कमी है। और अब ऐसे इंसान के घर पर किस तरह का संस्कार बनेगा, उनकी घर की औरतों का क्या होगा? और उनके बच्चों के भविष्य क्या होगा?

और ऐसे बिना मेहनत कर के इनकम करने वाले मर्दों के दिमाग पर साइंस आज कल बड़ी आसानी से कब्जा कर रहे हैं, और कब्जा करने की सबसे पहली सीढ़ी होते हैं कि "हाऊ टू मेक मॉनी ऑनलाइन" साइंस की कही गई इस शब्द पर लोगों के कीमती समय बीत जाता है, पर इनकम नहीं होता है, बाकायदा बिना मेहनत किये पैसा कमाने की उस खोज में उल्टा पैसा भी खर्च हो जाता है, कभी वेबसाइट बनाने के लिए पैसा लेता है तो कभी वीडियो बनाने के लिए कहता है, इसमें साइंस की चीज़ों की पब्लिसिटी भी हो जाता है और साइंस का अच्छा खासा कमाई भी हो जाता है।

और रही बात औरतों की, औरतों की दिमाग पर कब्जा करके तरक्की करने वाले साइंसों की इस दुनिया में इतिहास है। कहीं सेक्स फ्री के नाम पर औरतों से

कंडोम की सेल्लिंग करके साइंस तरक्की कर रहे हैं, तो कहीं औरतों को उनकी सच्ची खूबसूरती से दूर लेजाकर मेक अप. और नकली खूबसूरती के नाम पर उसपर तरह-तरह के प्रोडक्ट सेल्लिंग कर रहे हैं, बेचारी औरत तो अभी भी इस बात से बेखबर की साइंस अपनी तरक्की के लिए मुझे अपनी प्रोडक्ट सेल्लिंग मशीन बना दिया है।

और आज साइंस के बनाये हुए ऐसे कई सारे प्रोडक्ट औरतों के ज़रूरत बन गई है, जिसके बिना आज वो घर से बाहर नहीं निकल सकती है, और उन सभी प्रोडक्ट के लिए उन्हें पैसे की ज़रूरत है। और अगर उनके माँ-बाप भी "हाऊ तो मेक मॉनी ऑनलाइन" के चक्कर में पड़े हैं तो ज़ाहिर सी बात है उन्हें घर से पूरी तरह से मदद नहीं मिलने वाले हैं, और अपनी ज़रूरत की चीज़ों को खरीदने के लिए उसे जानबूझकर थोड़ा सा संस्कृति से भटक जाना है, और पैसा कमाने के घर से निकलना है।

और जब इंसान चंद रुपयों की महताज़ हो जाता है, तब आप सोच सकते हैं इंसान से किस तरह काम करवाया जा सकता है उसपर क्या-क्या बीतता है, उसे क्या क्या झेलना पड़ता है।

\*

नौकरानी पुष्पा के बलात्कार के आरोप से एक कोर्ट से इस कहानी की शुरुआत होता है।

जज के सामने कठगड़े में खड़ी पुष्पा ने अपने साहब के एकलौता बेटा हुडा पर अंगुली उठाकर जज से कहा "इस हैवान ने मेरा बलात्कार किया" पुष्पा की ये कहने पर वहां दोनों वकीलों की जमकर बहस होने लगा, और बहस के दौरान बार-बार पुष्पा से सवाल जवाब करने से पुष्पा शुरुआत से सबकुछ बताने लगी, "उस दिन सुबह-सुबह मैं हुडा के कमरे में साफ सफाई करने पहुँची, तब हुडा सो रहा था, लेकिन जैसे ही मैं कमरे की साफ सफाई करने लगी कि हुडा नींद से जाग गया, और नींद से जागकर मुझे अपने कमरे में अकेला पा कर मेरे साथ बदतमीज़ी करने लगा, मेरे बदन पर हाथ लगाने लगा, मैं मना करने लगी तो ये नहीं सुना, मैं भाग कर कमरे से निकलने की कोशिश की तो इसने मुझे पकड़ लिया, और मेरे साथ ज़बरदस्ती करने लगा, मैं चीखने-चिल्लाने लगी तो इसने मेरे मुँह पर कपड़े बांध दिया, और जब तक इसका मन चाहा तब तक इंसान के शक्ल में ये जानवर मेरे साथ ज़बरदस्ती करता रहा, भेड़ बकरियों की तरह मेरे बदन को नोचता रहा" कहकर पुष्पा रोने लगी, और हुडा ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा, तो जज साहब ने हुडा से पूछा,

"आप हँस क्यों रहे हैं?"

"मुझे इसकी बातों से हंसी आ रही है जज साहब, सुनिए किस तरह से ये लड़की झूठ बोल कर हमें उल्लू बना रही है, मैं सच बोल रहा हूँ, असल में उस दिन सुबह ऐसा कुछ हुआ ही नहीं, उस दिन सुबह क्या हुआ मैं आपको बताता हूँ, उस दिन सुबह-सुबह ये लड़की झाड़ू मारने के बहाने मेरे कमरे में आयी, और मुझे अपनी आधा बदन दिखा-दिखा कर झाड़ू मारने लगी, और झाड़ू मारते-मारते मेरे करीब चली आयी और मेरे साथ मस्ती करने लगी, और मस्ती करते-करते मेरे बिस्तर पर लेट गई, मुझे पकड़ने-जकड़ने लगी, मुझे अपनी बाहों में कसने लगी" हुडा ने कहा, ये सुनकर कोर्ट पर बैठे सभी लोग ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा, और पुष्पा रोने लगी,

"कानून से बचने के लिए ये झूठ बोल रहा है जज साहब, सिर्फ़ एक बार ही नहीं बल्कि इन्होंने बार-बार मेरा बलात्कार किया, जब घर पर कोई होते थे तब ये धिनौनी इंसान बहाना करके मुझे घर से बाहर होटल में लेकर जाता था, और वहां



मेरा बलात्कार करता था। एक रोज़ मार्केट से कुछ लाने के बहाने इन्होंने मुझे फ़ोन किया, और मुझे एक अट्रेस बताकर मुझे वहां जल्द से जल्द पहुँचने के लिए कहा, कहा की मैं बहुत सारे शॉपिंग किया हूँ, और वो सब अकेला घर लेकर नहीं आ सकता हूँ, इसलिए तुम्हें यहां आना है, और इसकी बातों में आकर मैं इनकी बताते हुए अट्रेस पर पहुँचने के लिए घर से निकल गयी।

"वहां न तो मुझे कोई शॉपिंग सेंटर मिली और न ही इन्होंने कोई शॉपिंग किया था, वो जगह एक बहुत बड़ा क्लब था, क्लब में बैठे-बैठे ये बहुत ज़्यादा दारू पी चुके थे। और मैं वहां इनके सामने पहुँची, तो मुझे देख कर इन्होंने मेरे लिए जूस मंगाया, मुझे जूस पीना ही नहीं था पर इन्होंने ज़बरदस्ती वो जूस मुझे पिला दिया। जूस में अल्कोहल था, थोड़ी देर में मेरा सिर भारी होने लगा मुझे चक्कर आने लगा, वहां डीजे म्यूजिक चल रहा था, काफी लोग नाच रहे थे, झूम रहे थे, और इसने मेरा हाथ पकड़कर ज़बरदस्ती मुझे सबके बीच लेकर गया, और मेरा कमर पकड़ कर नाचने लगा, मैं मना करती रही और ये अश्लील इंसान नहीं माना, बड़ी अश्लील तरीके से मेरे बदन पर हाथ लगता रहा, और नाचता रहा। उसके बाद क्या हुआ मुझे कुछ पता नहीं। सुबह मेरी आँखें खुली तो मैं अपने आपको इसकी घर की नौकरानी की कमरे में बिना कपड़ों में पाया। और मेरी बदन में जानवरों जैसे नोचि हुई नाखूनों के दाग़ और जिस्म की दर्द से मुझे एहसास हुआ कि रात को ये जानवर मेरे साथ क्या किया" पुष्पा ने कहा और फिरसे रोने लगी,

"मुझे इंसाफ़ चाहिए जज साहब, मुझे इंसाफ़ चाहिए" रो-रो कर पुष्पा ने ज़ोर-ज़ोर से कहा,

"ये लड़की झूठ बोल रही है जज साहब, अपनी मनगढ़ंत कहानियां बता कर हम सबको उल्लू बना रही है, मुझे फंसा रही है, मैं सच बोल रहा हूँ, आप मेरी बातों पर यकीन कीजिये" हुडा ने कहा, पर किसी ने हुडा के बातों पर विश्वास नहीं किया। और दोनों के बातों पे मद्देनजर रखते हुए जज साहब भी बड़ी दुविधा में नज़र आया, कुछ लिखा और हथौड़ा बजाते हुए अपनी तरफ से सब को दिया "तारीख़"

हुडा के पिताजी भण्डारी हुडा और अपने वकील हुसैन खान के साथ कोर्ट से बाहर आते हुए हुसैन खान से कहा, "चाहे कुछ भी हो जाए, कितनी भी पैसे क्योंना चले जाए मुझे कोई परवाह नहीं, लेकिन मेरा बेटा बचना चाहिए, हुडा बेगुनाह

साबित होना चाहिए वकील साहब" भण्डारी ने कहा, और हुसैन खान हां में सिर हिलाया,

"मेरे होते हुए आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं, हुडा अब आपका नहीं वो मेरा बेटा है" हुसैन खान ने कहा सुनकर भण्डारी को थोड़ी राहत मिली। बात करते-करते ये लोग कोर्ट से बाहर पहुँच चुके थे, तभी अचानक काफी सारे मीडिया वाले वहां पहुँच कर इन लोगों को घेर लिया, और तरह-तरह के सवाल-जवाब करने लगा, इतने बड़े व्यापारी का इकलौता बेटा पर बलात्कार का आरोप, क्या है सच, मीडिया जानने की कोशिश किया पर किसी ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया, ये लोग गाड़ी पर बैठा और चला गया, मीडिया बाकी के लोगों से इस बारे में पूछताछ करने लगे।

\*

घर पहुँच कर भण्डारी गुस्से में ज़ोर-ज़ोर से हुडा को थप्पड़ मारने लगा, और हुसैन खान आकर भण्डारी को रोका उन्हें शांत करने लगा,

"हारामखोर, पूरी दुनिया की लड़कियां पड़ी थी, सबको छोड़ कर तू नौकरानी के साथ इश्क़ लड़ा रहा था?" भण्डारी ने गुस्से में हुडा से कहा, हुडा रोने लगा, वो कुछ कहने वाला था तब तक हुसैन खान बीच में आ गया,

"अरे भण्डारी साहब आप गुस्सा क्यों होते हैं? शांत हो जाइए" हुसैन खान ने कहा, "बाप का नाम खराब कर दिया हारामखोर ने, किसी के सामने मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा" भण्डारी ने गुस्से में कहा,

"अरे बच्चा है इस, उम्र में ग़लतियां हो जाती है, इस उम्र में बच्चे ग़लती नहीं करेंगे तो क्या बुढ़ापे में करेंगे?" हुसैन खान ने कहा,

"इसमें मेरी कोई ग़लती नहीं है पिताजी, सारा ग़लती वो लड़की की है, उसने मुझे फंसाया है" गाल पर हाथ रखे हुए हुडा ने कहा, और माँ आकर हुडा की आँखों से आंसू पोंछने लगी, और प्यार से उसे उसके कमरे में ले कर चली गयी,

"कितने लोग मेरे कंपनियों में नौकरी करके अपने घर परिवार चलते हैं, मेरे घर से निकलते ही कितने लोग मुझे सलाम ठोकते है, कितने साल लगता है इज़्ज़त कमाने में। और मेरा नालायक बेटा एक ही झटके में मेरी सारी इज़्ज़त का कचड़ा

कर दिया, अब लोग मुझे इज़्ज़त देना बंद कर देंगे, मुझपर थू-थू करेंगे" भण्डारी ने गुस्से में कहा,

"भण्डारी साहब आप गुस्सा मत होइए शांत हो जाइए, गुस्सा करने से कुछ नहीं होता है" हुसैन खान ने कहा,

"वो मेरी घर की एक नौकरानी है यार, उसकी औकात क्या है, उसने मुझे कोर्ट पर घसीट कर लेके गयी" भण्डारी ने कहा,

"साहब, वो कहाबत सुना है न आप? कि एक हाथ से कभी ताली नहीं बजती है, ठीक उसी तरह हुआ ये मामला, गलती दोनों तरफ से हुई है, इसलिए हमें शांत रहना होगा और गुस्से में नहीं ठंडे दिमाग से कम लेना होगा, नहीं तो हम ये केस जीत नहीं पाएंगे" हुसैन ने कहा, भण्डारी ने खुद को शांत करने की कोशिश किया,

"ऐसा मत बोल यार हुसैन, तू मेरा भाई है, और मुझे तुझ पर पूरा भरोसा है, एक तू ही है जो मुझे इस केस से छुटकारा दिला सकता है" भण्डारी ने कहा,

"आप मुझे अपना भाई मानते हैं तो फिर फ़िक्र करना ही छोड़ दीजिए, क्योंकि मैंने आज तक अपने ज़िंदगी कभी कोई केस नहीं हरा, और इस बार भी नहीं हारूँगा, ये मेरा चैलेंज है, ये केस मेरे लिए कुछ नहीं, मैं चुटकी में इस केस को जीत जाऊँगा, आप देखते जाइये मैं कैसे अगले तारीख में सबकी पुंगी बजाता हूँ" हुसैन खान ने कहा, सुनकर भण्डारी को थोड़ी सी राहत मिली, उसे अच्छा लगा, हुसैन खान की बातें सुनकर भण्डारी के चेहरे पर खुशी के रौनक नज़र आया।

\*

कोर्ट में हुडा उसके माता-पिता, पुष्पा उसके माता-पिता, और सभी लोगों के मौजूदगी पर हुसैन खान कठगड़े में रेहान नम का एक शख्स को पेश करने के लिए जज से अनुमति मंगा, हुसैन खान का कहना है कि पुष्पा के मेडिकल रिपोर्ट में रेहान नाम का ये शख्स का डीएनए पाया गया है। हुसैन खान ने जज साहब को सारे कागज़ात दिखाने लगा, जज साहब सारे कागज़ात देखने के बाद कहा, "अनुमति है" और जज साहब के अनुमति पाने के बाद हुसैन खान ने रेहान को सबके सामने कठगड़े में बुलाया, और रेहान कठगड़े आकर सबके सामने खड़ा हुआ,

"जज साहब, पुष्पा देवी की मेडिकल रिपोर्ट में रेहान नाम इस शख्स का डीएनए पाया गया है, और रिपोर्ट ये भी साफ-साफ कह रहा है कि सिर्फ एक बार ही नहीं बल्कि बार-बार रेहान ने पुष्पा का बलात्कार किया। तो क्या हम ये जान सकते हैं, कि रेहान के नाम से अभी तक बलात्कार का केस दर्ज क्यों नहीं हुआ?" हुसैन खान ने कहा, और इसका जवाब देने के लिए पुष्पा कठगड़े में आकर खड़ी हुई, "वो बलात्कार नहीं, हमारी मर्जी से हुआ" पुष्पा ने कहा,

"तो क्या मैं ये जान सकता हूँ? कि कब-कब और किस हालात में आप दोनों की ये मर्जी बार-बार हुआ?" हुसैन खान ने कहा, ये सुनकर पुष्पा का वकील जगन्नाथ ऑब्जेक्शन किया,

"जज साहब, सबके सामने हमारी माँ-बहनों से ये पूछा जा रहा है, कि अपने रेहान के साथ कब और किस हालात में सोए?, ये हमारे माँ-बहनों की बेइज्जती है जज साहब" जगन्नाथ ने कहा,

"ये मामला हमारे महान व्यक्ति श्री भण्डारी साहब के एकलौते बेटे की ज़िंदगी और मौत के साथ जुड़ी है जज साहब, इसलिए हमें इसका अनुमति दिया जाए" हुसैन खान ने कहा,

"अनुमति है" जज साहब ने कहा, ये सुनकर हुसैन खान खुश हुआ,

"तो क्या आप हमें खुलकर सबकुछ बतायेंगे आप दोनों के रिश्ते के बारे में?" हुसैन खान ने पूछा,

"हम दोनों एक ही ऑफिस में जॉब करते थे, वहीं से हमारी पहचान हुई, और वहीं से हमारी रिश्ता भी आगे बढ़ा, और उसके बाद जब-जब हमारे मर्जी हुआ, हम दोनों ने किया" पुष्पा ने कहा,

"क्या ये सच है?" हुसैन खान ने रेहान से पूछा,

"जी" रेहान ने कहा,

"क्या आप हम सबको बताएंगे? आपको पुष्पा देवी से कब और किस हालात में मुलाकात हुई थी" हुसैन खान ने रेहान से पूछा,

"ये बात सच है, उस ऑफिस में ही हम दोनों की मुलाकात हुई, मैं उस ऑफिस में नया था, और पुष्पा पुरानी थी, उसे उस ऑफिस के बारे में सब कुछ पता था, और जब मुझे किसी चीज के बारे में पता करना रहता था तब मैं पुष्पा से पूछा करता था। हम दोनों की अच्छी बातचीत होती थी, और धीरे-धीरे हमारी अच्छी दोस्ती भी

हो गयी, और एक दिन हमारी दोस्ती प्यार में बदल गया। और कुछ दिन बाद मुझे पता चला कि मुझसे पहले हमारे सीनियर के साथ पुष्पा की अफ़ेयर था" रेहान ने कहा,

"तो आप ये कहना चाहते हैं कि आपसे पहले पुष्पा देवी की बॉयफ्रेंड आपका सीनियर था?" हुसैन खान ने पूछा,

"जी हां" रेहान ने कहा,

"क्या मैं ये जान सकता हूँ? कि आपने अपने सीनियर को छोड़कर इनके साथ प्यार क्यों कर लिया?, क्या आपका सीनियर आपके पीछे खर्च करना बंद कर दिया था, या फिर कोई दूसरी वजह थी?" हुसैन खान ने पुष्पा से पूछा,

"जज साहब ये पर्सनल मामला है, कृपया इस बारे में कोई बातचीत नहीं कि जाए" जगन्नाथ ने कहा, और जज ने हां में सिर हिलाया,

"माफ़ कीजिएगा जज साहब" हुसैन खान ने कहा, और रेहान के करीब गया,

"तो क्या अब भी आप दोनों का रिश्ता वैसा ही है? जैसा की पहले था" हुसैन खान ने रेहान से पूछा, इस सवाल से रेहान नर्बस हुआ,

"नहीं" रेहान ने कहा,

"क्यों?" हुसैन खान ने पूछा,

"कुछ दिन बाद पुष्पा मुझे छोड़कर चली गयी" रेहान ने कहा,

"क्यों?, इन्होंने आपको छोड़ कर क्यों चली गयी?" हुसैन खान ने पूछा,

"एक रोज की बात है, जब पुष्पा का एक्स बॉयफ्रेंड अपनी गर्लफ्रेंड के साथ पुष्पा को सुना-सुना कर फिल्म देखने जाने और होटल में खाना खाने की बात कर रहा था, ये बात पुष्पा ने सुन लिया, और कुछ देर बाद मुझे आकर कहा कि चलो आज हम भी फिल्म देखने चलते हैं" रेहान ने कहा,

"ये बात आपको कैसे पता चला कि पुष्पा अपना एक्स बॉयफ्रेंड के बातें सुनने के बाद आपको आकर फिल्म देखने और होटल में खाना खाने की बात किया?" हुसैन खान ने पूछा,

"उसने खुद आकर मुझे बताया कि वो अपने गर्लफ्रेंड के साथ फिल्म देखने जा रहे हैं" रेहान ने कहा,

"तो आप ये कहना चाहते हैं कि पुष्पा अपने एक्स बॉयफ्रेंड के साथ कंपीटिशन लड़ता था, और उस कंपीटिशन में पुष्पा आपको और आपके पैसे को रेस का घोड़ा बना कर इस्तेमाल करता था" हुसैन खान ने कहा, इसका जवाब देने के लिए रेहान कुछ पल सोचा,

"जी" रेहान ने कहा,

"फिर, उसके बाद क्या हुआ? क्या उस दिन आप पुष्पा के साथ फिल्म देखने गए थे?" हुसैन खान ने पूछा,

"नहीं, उस दिन मेरा फिल्म देखने जाने का मन नहीं था, और थोड़ी फाइनांशियल प्रोब्लम भी थी, जिसकी वजह से मैंने पुष्पा से कहा की आज नहीं हम किसी दूसरे दिन चलेंगे। शायद ये बात पुष्पा को बुरा लगा, मैंने जब पुष्पा से ये बात कहा तो पुष्पा खामोश हो गई, पूरा दिन मुझसे नाराज़ रही। उसके बाद में इन्हें मनाने की काफी कोशिश किया, ऑफिस के बाद इन्हें अपने बाइक से घर तक छोड़ने के लिए भी गया, लेकिन रास्ते पर मेरा बाइक खराब हो गया, मैं बाइक को स्टार्ट करने की कोशिश में लगा कि पुष्पा वहां पर मुझे अकेला छोड़ कर जाने लगी, और रास्ते पर चलते किसी मर्सिडीज वाले से लिफ्ट मांग ली, वो मर्सिडीज वाला इन्हें लिफ्ट दिया और ये मर्सिडीज पर बैठ कर चली गयी, वो हमारा आखरी मुलाकात था" रेहान ने कहा,

"इस बात से ये साबित हो गया जज साहब, पुष्पा एक बाज़ारू औरत है, सिर्फ़ पैसे के लिए इन्हें जवान लड़कों से प्यार हो जाता है, पैसे के लिए पुष्पा बिस्तर की तरह हर रोज अपना बॉयफ्रेंड बदलती है, और जिसके पास पैसा नहीं होता है पुष्पा उसे ठुकरा देती है, और जिसके पास पैसा होता है उसे कसकर पकड़ लेती है जकड़ लेती है, ठीक इसी तरह पैसे की लालच में आकर इन्होंने हुडा को अपने गोरा बदन दिखा-दिखा कर अपने प्रेम जाल में फंसाया, और हुडा से पैसे हड़पने की कोशिश किया, और जब हुडा ने पैसे देने से इनकार कर दिया तब इन्होंने हुडा को अपने बलात्कार के आरोप में फंसा दिया। ये केस स्पष्ट हो गया, कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं, अब जल्द से जल्द इस लड़की को चरित्रहीन घोषित किया जाए जज साहब, और हुडा की बाइज़्जत बरी की जाए, मुझे कानून से यही दरखास्त है" हुसैन खान ने कहा, और जगन्नाथ ऑब्जेक्शन किया,

"किसी लड़की ने अपना बॉयफ्रेंड को ठुकरा दिया, तो इसका मतलब ये नहीं कि वो चरित्रहीन है, उसे ठुकराने की कई सारे वजह भी हो सकता है?" जगन्नाथ ने

कहा,

"तो बताइए वो वजह क्या थी जिससे अपने रेहान को ठुकरा दिया?" हुसैन खान ने पुष्पा से पूछा, इस सवाल से पुष्पा कुछ देर के लिए कंप्यूजन सी हो गई, खामोश हो गई और खामोशी से रेहान को देखने लगी,

"बताइये बताइये मैडम जी, कोई नई कहानी बना कर हम सबको उल्लू बना दीजिये" हुसैन खान ने कहा,

"रेहान मुझे खुश नहीं कर पाता था" पुष्पा ने कहा, ये सुनकर रेहान खामोश हो गया उसके आँखों में आंसू आ गया, और हुसैन खान ने चिल्ला कर कहा,

"सुनिए जज साहब सुनिए, जब कहने के लिए कुछ नहीं बचा तब ये लड़की केस जितने के लिए किस तरह मर्द जात पर कीचड़ उछाला" हुसैन खान ने कहा,

"इसमें कीचड़ उछालने की क्या बात है?" जगन्नाथ ने कहा, और हुसैन खान रेहान के करीब जाने लगा,

"क्या आप अभी और इसी वक्त सबके सामने पुष्पा देवी को ये साबित कर दिखा सकते हैं? कि पुष्पा देवी ने आप पर ग़लत इल्ज़ाम लगाया है?" हुसैन खान ने रेहान से पूछा, और रेहान कुछ पल के लिए किसी सोच में डूब गया, और हां में सिर हिलाया, तब-तक जज साहब को गुस्सा आ गया,

"ये क्या फालतू गिरी किये जा रहे हैं आप लोग?" जज साहब ने गुस्से में कहा,

"जज साहब आप पूरी बात तो सुनिए" हुसैन खान ने कहा,

"नहीं अब और कुछ नहीं सुनना है मुझे, मैं जबसे आप लोगों के फालतू के बकवास सुनता जा रहा हूँ, अब अगर किसी ने भी एक भी फालतू के बातें किये, तो मैं बिना सोचे समझे अभी और इसी वक्त इस केस की सुनवाई कर दूंगा" जज साहब ने गुस्से में कहा, सुनकर सब लोग चुप हो गया,

"अरे भाई ये कोर्ट है, लोग यहां इंसॉफ़ मांगने आते हैं, आप लोग क्या समझ रखा है इसे? भैस का तबेला?" जज साहब ने कहा, और अपने कबाट के अंदर से डायबिटीज का गोली निकाल कर खाया, और हथौड़ा बजाते हुए गुस्से में सबको अगली तारीख़ दिया।

\*

हुडा के घर पर वकील हुसैन खान सिरपर हाथ रखकर बड़ी टेंशन में बैठा है, हुडा टेंशन में वहां पहुँचा, हुसैन खान के पैर के पास ज़मीन पर बैठ गया,

"अब कुछ नहीं हो सकता है क्या?" हुडा ने पूछा,

"टेंशन मत ले यार, मैं हूँ न, कुछ नहीं होने दूंगा तुझे" टेंशन में बैठे हुसैन खान ने कहा,

"मुझे एक बात समझ नहीं आया? पुष्पा कह रही थी कि वो रेहान के साथ ऑफिस में नौकरी कर रही थी, तो अगर वो ऑफिस में नौकरी कर रही थी, तो तेरे घर की नौकरानी कब बनी? और ऑफिस की नौकरी छोड़ कर वो तेरे घर की नौकरानी क्यों बनी?" हुसैन खान ने पूछा,

"रेहान उस टाइम कहानी बता रहा था आप भूल गए क्या?" हुडा कहने लगा, "कि एक मर्सिडीज वाला आया और पुष्पा को लिफ्ट दिया, वो मर्सिडीज वाला मैं ही था" हुडा ने कहा, सुनकर हुसैन खान आश्चर्यजनक हो गया, और हुडा अपने और पुष्पा के बारे में शुरुआत से सबकुछ हुसैन खान को बताने लगा,

"उस दिन जाते-जाते रास्ते पर उसे लिफ्ट मांगते देखकर मैं अपने ड्राइवर नीलेश को उसे लिफ्ट देने को कहा, और नीलेश ने गाड़ी रोका और उसे लिफ्ट दिया, और वो मेरे बाजू में बैठ गई, हम दोनों के बीच थोड़ी अच्छी बातचीत होने लगी, और बातचीत दोस्ती में बदल गई, उस टाइम मुझे भूख भी बड़ी तेज़ लगी थी, ये बात मैंने नीलेश से कहा तो नीलेश हमें एक रेस्टॉरेंट में लेकर गया, मैंने काफी कुछ मंगाया, उसके लिए भी। खाते-खाते हम दोनों के बीच काफी सारे बातें हुईं, हम दोनों एक दूसरे के बारे में काफी कुछ जान गए, एक दूसरे का मोबाइल नंबर भी लिया, और शाम को नीलेश के साथ मैंने उसे उसके घर तक भी छोड़ा।

दूसरे दिन मैंने देखा कि मेरे मोबाइल पर उसकी एक मिस्ड कॉल आया, मैं उसे कॉलबैक किया तो उसने कहा कुछ नहीं ऐसे ही कॉल कर रही थी। और उस समय अचानक मेरे मुँह से निकल गया कि आज फ्री हो क्या? और उसने हां कह दिया। मैं समझ गया ये लड़की मुझे चांस दे रही है, तो मैंने भी उसे झूठ बोल कर बुला लिया कहा आज मेरा हैप्पी बर्थडे है तुम आना चाहती हो तो आ जाओ, अपने दोस्तों से तुम्हें मिलाता हूँ। मैंने ये कहा तो वो आने के लिए राज़ी हो गयी।

फिर कुछ देर बाद हम दोनों एक शॉपिंग मॉल में मिले, वो अच्छी लग रही थी, लाल रंग की सलवार कमीज में। उसके साथ मैं शॉपिंग मॉल के अंदर घूम ही



रह था कि मुझे एक खूबसूरत ड्रेस पसंद आया, उस ड्रेस को देख कर मेरे मन में खयाल आया कि इस ड्रेस में पुष्पा होती तो वो और ज़्यादा खूबसूरत लगती, और ये सोचकर मैंने ज़बरदस्ती उसे वो ड्रेस खरीद कर दिया। जब वो उस छोटी सी ड्रेस को पहन कर वो मेरे सामने आई तो उसे देख कर मेरा होश उड़ गया, वो बहुत हॉट, बहुत खूबसूरत लग रही थी।

उसे लेकर मैं एक डिस्को में गया, उसे अपने कुछ नकली दोस्तों से मिलाया, और अपनी नकली बर्थडे पार्टी में अपने नकली दोस्तों के साथ खूब पिया, उसे भी ज़बरदस्ती पिलाया और काफी देर तक उसके साथ मैं डांस किया। उसके बाद मुझे और रहा नहीं गया, उसके साथ मेरा कुछ करने का मन हुआ, पर वो भले ही नशे में थी, लेकिन अपनी बदन पर मुझे हाथ ही नहीं लगाने दे रही थी, कह रही थी कि हम जो कुछ भी करेंगे होशोहवास में करेंगे।

उस दिन के बाद वो बदल चुकी थी, हर रोज छोटी-छोटी कपड़े पहन कर मेरे सामने आया करती थी, दिन-ब दिन खिलती जा रही थी, अपनी नशेली अदाओं से वो मुझे अपनी दीवाना बनाती जा रही थी, हर रोज अपनी दो नैनों की बाण से मेरे दिल को क़त्ल किये जा रही थी, अपनी गोरा बदन दिखा-दिखा कर मुझे तड़पा रही थी, तरसा रही थी। ऐसे हालात में मैं क्या करता? मैं तो बेचारा फंस गया था उसकी नकली प्यार की जाल में, मुझे संभालने वाला कोई नहीं था, मैं डूब चुका जा था उसकी दो नैनों की उस प्यासी झील में, तड़प गया था उसे छूने के लिए, तरस गया था उससे कुछ पल की खुशी हासिल करने के लिए।

और कुछ दिन बाद एक दिन उसने मेरी ज़िंदगी में एक खुशी के पल लाया, मैं दारू के नशे में और वो होशोहवास में किसी फाइव स्टार होटल के एक कमरे में, वो आधी कपड़े में और मैं बिना कपड़ों में, हम दोनों एक दूसरे के सामने खड़े। उसने मुझसे सिर्फ़ एक ही बात पूछा, "तुम मुझे कितना प्यार करते हो?" और ये सुनकर मैं उस पर नोटों की बारिश कर दिया, उसके बिस्तर पर बिस्तर नहीं नॉट बिछा दिया, वो नोटों के साथ खेलती रही और मैं उसकी गोरा बदन के साथ।

शाम को मुझे होश आया कि मैं तो गोआ जा रहा था अपने कंपनी के वर्कर्स को सैलेरी देने के लिए, लेकिन सारा पैसा तो मैंने उस पर उड़ा दिया अब क्या करूँ?। फिर मैं अपना सीधा-साधा ड्राइवर नीलेश को बकरा बनाया, नीलेश के ज़रिए पिताजी को फ़ोन किया कहा, रास्ते पर गुंडों ने हमें पकड़ लिया था, हमें छोड़

दिया और सारा पैसा छीन लिया। लेकिन पिताजी को मेरे आदतों के बारे में पहले से ही पता था, उसने हमें बहुत डांटा, और चुपचाप हम दोनों को घर वापस आने की सलाह दिया।

कुछ दिन बाद ये लड़की फिर से मुझे फ़ोन किया पूछा, "कहां हो तुम?" पर मैंने कुछ नहीं कहा, मैं चुपचाप फ़ोन रख दिया, और बर्बादी की उस पल को भूलने की कोशिश किया।

कुछ दिन बाद जब हम घर लौटे, तो मेरी नौकरानी अंटी की शक्ल बदल चुकी थी, आंटी से वो सीधा जवान पुष्पा बन चुकी थी। ये देखकर मुझे बड़ी आश्चर्य हुआ। और उस दिन के बाद उसे घर से निकालने के लिए मैं कई सारे तरीके आजमाया, लेकिन हर बार नाकाम हो गया। उसके बाद मेरे घर पर भी उसने मुझपर अपना जादू चलाने लगी थी, जब घर पर कोई नहीं होते थे तो वो बिना कपड़ों में मेरे सामने घूमती-फिरती थी।

आप ही बताइए हुसैन भाई? ऐसे हालात में मैं क्या करता?। कुछ नहीं कर पाया हुसैन भाई, मैं लूट गया, बर्बाद हो गया। मेरी बर्बादी की कहानी की आगे का भाग आप सुनना चाहेंगे तो मैं वो भी आपको बताने के लिए तैयार हूँ" हुडा ने कहा, "और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं मेरे लाल, मैं तेरी पूरी कहानी समझ गया, वो लड़की बहुत चालक है, उसने तुझे दूर से फंसाया है, और पूरी तरह से फंसा दिया, उसे तुझसे नहीं तेरे दौलत से प्यार है" हुसैन खान ने कहा, "तो अब आप बताइए क्या किया जाए? कैसे उस मुसीबत से छुटकारा पाया जाए?"

"तू फ़िक्र मत कर, अब मुझे तेरी कहानी मालूम पड़ गया, और अब वो मेरे सामने टिक नहीं सकती है, वो जेल जाएगी, और तू जेल से बाहर, ये हुसैन खान का वादा रहा, आज तक मैंने कोई केस नहीं हरा, और इस बार भी नहीं हारूँगा" हुसैन खान ने कहा, लेकिन फिरभी हुडा टेंशन में है,

"मुझे पता है वो पगली इस समय ज़रूर अपने वकील के साथ बैठी होगी? और केस जितने की पूरी तैयारी कर रही होगी, थोड़ा भी टेंशन मत ले, कितना भी दिमाग लगाती हैं लगाने दे, मैं उसे देख लूँगा" हुसैन खान ने कहा, ये सुनकर भी

हुडा को सुकून महसूस नहीं हुआ, वो हुसैन खान को थोड़ी नकली हंसी दिखा कर टेंशन में वहीं बैठा रह गया,

\*

अपनी घर में पुष्पा अपने आठ साल का छोटा भाई रोहित को डांट रही है उसे थप्पड़ मार रही है, मारते-मारते उसे उसके कमरे में ले कर गयी, कमरे में उसके पिताजी अपने वकील जगन्नाथ के साथ बैठे सिगरेट पीते हुए केस के बारे में बातचीत कर रहा था,

"अरे क्यों मार रही हो बेटी इसे? क्या किया इसने?" पिताजी ने पूछा,

"पिताजी ये जितना ही बड़ा होता जा रहा है उतना ही ज़्यादा बदमाशियां कर रहे हैं" पुष्पा ने कहा,

"बेटा बदमाशियां बंद करो और पढ़ाई लिखाई में ध्यान दो" रोहित से इतना कहकर पिताजी वापस सिगरेट पीते हुए जगन्नाथ के साथ बातचीत करने लगा, और पुष्पा रोहित को पिताजी और जगन्नाथ के पीछे बिस्तर पर बैठा कर उसके सामने किताब रख दिया,

"पढ़ाई छोड़कर अगर यहां से थोड़ा भी हिले तो फिरसे तुम्हें डंडे पड़ेंगे" रोहित से इतना कहकर पुष्पा कमरे से बाहर चली गयी, और रोहित चुपचाप अपने पिताजी के पीछे बिस्तर पर बैठे पढ़ाई करने लगा। कुछ देर तक पिताजी और जगन्नाथ बैठे पुष्पा की केस के बारे में बातचीत करते रहे, और फिर एक झलक रोहित पर इन दोनों के नज़र पड़ने पर दोनों को अहसास हुआ कि रोहित को पढ़ाई में डिस्टर्ब हो रहा है, ये सोच कर दोनों सिगरेट खत्म करके कमरे से बाहर चले आए। ये दोनों के कमरे से बाहर निकलते ही रोहित अपने पिताजी का जूठा सिगरेट उठाया और पीने लगा।

कुछ देर बाद रोहित अपने कमरे से बाहर आया और चोरी चुपके से दरवाज़े की खेद से अपनी बहन के कमरे में झांकने लगा। उसकी बहन पुष्पा गर्मी का मौसम वाला पतला और टाइट टी शर्ट पहनी हुई कुर्सी पर ऐसी सेक्सी स्टाइल में बैठी थी, कि उसे देख कर रोहित का बदन गर्म हो गया, टी शर्ट इतनी फिटिंग थी कि रोहित को अपने बहन की जिस्म पूरा साफ दिखाई दे रहा था। और गर्मी के

मौसम वाला टाउजार पहनी थी, टाउजार इतनी पतली और फिटिंग थी कि रोहित को अपनी बहन की पेशाब करने वाली जगह पूरा साफ दिखाई दे रहा था। ये सब देखकर रोहित को और बर्दाश्त नहीं हुआ, वो सीधा अपना पेंट उतारा, चड्ढी खोला, और बहन को देख-देखकर हस्तमैथून करने लगा।

\*

कोर्ट में सभी लोगों के मौजूदगी पर, दोनों वकीलों की जम कर बहस होने के बाद जगन्नाथ ने कहा, "जज साहब अगर किसी लड़की की ऑफिस में नौकरी छूट जाए?, और वो लड़की मजबूरी में आकर किसी के घर पर काम करे?, उनके घर का जूठा बर्तन साफ करके अपनी पेट पाले अपनी घरपरिवार चलाये? तो इसका मतलब ये नहीं कि उसकी चाल-चलन ठीक नहीं है वो चरित्रहीन है" जगन्नाथ ने कहा, सुनकर जज साहब हां में सिर हिलाया, हुडा और पुष्पा कठगड़े में खड़े हैं, "जज साहब ये लड़की अपनी पेट पालने के लिए हुडा के घर पर काम करने नहीं गयी, बल्कि फिरसे हुडा से अपनी बलात्कार करवाने गयी थी, और हुडा से फिरसे अपनी बलात्कार करवाने से पहले इसने फिरसे हुडा को अपने प्यार के जाल में फंसाया, उसके बाद हुडा से पैसे मांगना शुरू की, करोड़ों रुपए हड़पने की कोशिश किया, और जब हुडा ने पैसे देने से इनकार कर दिया तब ये बदचलन लड़की हुडा को अपने बलात्कार के आरोप में फंसा दिया" हुसैन खान ने कहा, "तो आप ये कहना चाहते कि पहले पुष्पा ने हुडा को अपने प्यार के जाल में फंसाया?" जगन्नाथ ने कहा, "एस, ये बिल्कुल सच है" जगन्नाथ ने कहा, "फिर पुष्पा ने हुडा से अपनी बलात्कार करवाया?" जगन्नाथ ने कहा, "ये भी सच है" हुसैन खान ने कहा "और हुडा ने बलात्कार किया?" जगन्नाथ ने कहा, ये सुनकर हुसैन खान चैंक गया, वो शांत होने की कोशिश किया, "नहीं ऐसा नहीं हुआ, वहां दोनों की मर्जी से हुआ" हुसैन खान ने प्यार से कहा, "चाहे दोनों की मर्जी से हुआ या फिर किसी एक की मर्जी से हुआ, लेकिन हुआ" जगन्नाथ ने का,

"हां हुआ, लेकिन दोनों की मर्ज़ी से ही हुआ, और जहाँ दोनों की मर्ज़ी से हुआ तो वहां बलात्कार कैसे हुआ" हुसैन खान ने कहा,

"बलात्कार नहीं हुआ तो और क्या हुआ?" जगन्नाथ ने पूछा,

"दोनों की मनोरंजन हुआ" हुसैन खान ने कहा,

"सुनिए जज साहब सुनिए, हमारे महान व्यक्ति श्री भण्डारी साहब का इकलौता बेटा हर रोज किसी गरीब की बेटी के साथ शोषण किया, और हमारे महान हुसैन साहब कह रहा है, कि वो बलात्कार नहीं हुआ भण्डारी साहब के बेटे का मनोरंजन हुआ" जगन्नाथ ने चिल्लाकर कहा, ये सुनकर कोर्ट पर बैठे सभी लोग खामोश हो गए, जज साहब कुछ लिखने लगा, कि तब तक हुसैन खान कुर्सी पर बैठे हुडा के पिताजी भण्डारी के पास गया, उनके कान में कुछ खुसुर-फुसुर किया, तो भण्डारी ने ना में सिर हिलाया, और हुसैन खान ने कहा, "इसके अलावा हमारे पास और कोई चारा नहीं है" ये सुनकर बड़ी गम्भीरता से कुछ सोचने लगा, और सोचने के बाद जैसे ज़बरदस्ती हां में सिर हिलाया, और हुसैन खान भण्डारी को इशारा किया कि ये बात जा कर कठगड़े में खड़े हुडा से कहो, और हुसैन खान के समझाने के मुताबिक भण्डारी कठगड़े में खड़े हुडा के पास गया, और हुडा के कान में वही बात खुसुर-फुसुर किया, तो हुडा ने भी अपने पिताजी के तरह न में सिर हिलाया, फिर भण्डारी ने कहा,

"इसके अलावा हमारे पास और कोई चारा नहीं है" ये सुनकर हुडा भी अपने पिताजी की तरह बड़ी गंभीरता से कुछ सोचा, और कठगड़े में खड़ी पुष्पा को गुस्से में घूरते हुए हां में सिर हिलाया, ये देखकर हुसैन खान ने जज से कहा, "जज साहब बस एक आखरी तारीख की मांग है" हुसैन खान ने कहा, सुनकर जज साहब चिंतित हुआ और जगन्नाथ को देखा,

"दे दीजिए जज साहब दे दीजिए, हुसैन खान की एक आखरी तारीख की ही तो मंगा है, दे दीजिए" जगन्नाथ ने कहा, और जज साहब हां में सिर हिलाकर हथौड़ा ठोकते हुए आखरी तारीख दिया।

\*

आखरी तारीख के दिन अपनी माँ-बाप के साथ पुष्पा कोर्ट के सामने पहुँच चुकी थी, रास्ता क्रोस करके वो कोर्ट के अंदर दाखिल होने ही वाली थी कि अचानक

एक मारुति वैन आकर पुष्पा के सामने रुका, और अचानक उस मारुति वैन से कुछ गुंडे उतरे और पुष्पा को ज़बरदस्ती उठाकर ले गए। ये हादसा इतना जल्दी-जल्दी हुआ कि किसीको पुष्पा की मदद करने का मौक़ा ही नहीं मिला, रोड पर खड़े उसके माँ-बाप चिल्लाते रहे और गुंडे लोग पुष्पा को लेकर चले गए। काफी सारे पुलिस की गाड़ियां भी बड़ी तेजी से उस मारुति वैन के पिछ निकले।

जब-तक पुलिस पुष्पा के पास पहुँचा तब-तक हुडा दौड़-दौड़ कर पुष्पा के साथ सात फेरे पूरे कर चुके थे, पंडित जी और काफी सारे भ्रमण के मौजूदगी पर पुष्पा के साथ हुडा की शादी सम्पन्न हो गया, और पुलिस वहां पहुँच कर हुडा का कुछ नहीं कर पाया, हुडा पुष्पा को दुल्हन बना कर पुलिस के सामने से लेकर चल गया, पुलिस देखते रह गया।

पुष्पा को लेकर हुडा अपने घर के पास पहुँचा तो सोसायटी के सभी लोग भाग-भाग कर आया और चारों ओर से घेर कर पुष्पा को देखने लगे, पुष्पा के बारे में सब आपस में खुसुर-फुसुर करने लगे, ऐसे हालात में और उस माहौल में ये सब देखकर हुडा को बहुत शर्मिंदगी महसूस हुआ, और वो नज़रें झुका लिया और चुपचाप पुष्पा के साथ अपने घर के अंदर चला गया, घर के बाहर पब्लिक पुष्पा के बारे में गुप्-गाप करते रहे।

घर के अंदर सिर पर हाथ रख कर भण्डारी कुर्सी पर बड़ी टेंशन में बैठे हैं, ऐसे जैसे उस घर पर कोई मर गया हो, और उसके सामने बैठे हुसैन खान जीत की जशन मना रहे हैं, वो खुशी में भण्डारी के सामने बैठे दारू पी रहा है और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है, "मैं जीत गया, मैं जीत गया"।

\*

सुहाग रात को हुडा टेंशन में दूसरी तरफ मुँह करके लेटा है, खुशहाल पुष्पा उसके पास लेटी है, और हुडा को देख रही है, हुडा उसके साथ कुछ बातचीत करे पुष्पा उसकी इंतज़ार कर रही है, इस इंतज़ार में काफी वक़्त बीत गया लेकिन हुडा ने पुष्पा के साथ कोई बातचीत नहीं किया, न ही पुष्पा को एक नज़र देखा। वो दूसरी ओर मुँह करके गुस्से में लेटा रह गया। पुष्पा ने हुडा को मनाने की कोशिश किया, हुडा के बदन पर हल्का सा हाथ क्या रखा हुडा गुस्से में पुष्पा

की हाथ अपनी बदन से हटा दिया, और दूसरी ओर मुँह करके लेटा रहा, पर हुडा की इस हरकत से पुष्पा नाराज़ नहीं हुई, वो हुडा के पास लेटी हुडा को देखती रही।

सुबह लेट पुष्पा की आँख खुली, उसकी नींद से जागने से पहले ही हुडा कमरे से निकल चुका था। पुष्पा कमरे से बाहर आयी, उसकी सासूमाँ किचन में बर्तन धो रही थी, ये देख कर पुष्पा किचन के अंदर सासूमाँ के पास आयी, और सासूमाँ की मदद करने लगी, सासूमाँ के साथ बर्तन धोने लगी कि उसे देखकर सासूमाँ चुपचाप किचन से बाहर चली गयी, पुष्पा सासूमाँ की हरकत देख कर थोड़ी सी आश्चर्य ज़रूर हुई, लेकिन अपने आपको संभाल ली और और सासूमाँ को जाते देखती रही, उसे थोड़ी सी नर्बस महसूस हुई सासूमाँ की उस हरकत के वजह से, पर पुष्पा करे तो क्या करे? सासूमाँ के जाने के बाद वो चुपचाप बर्तन धोने में ब्यस्त हो गई।

घर की बेलकोनी में हुडा के माता-पिता एक दूसरे के साथ बैठे बातचीत करते हुए नास्ता कर रहे थे, और हुडा वहां बेलकोनी में पहुँचा, और दूर खड़ा हो कर माँ-बाप को देखकर कुछ पल के लिए सोचने लगा, की उनके पास जाऊँ कि नहीं, ये सोचते हुए वो उनके पास चला गया और दोनों के बाजू में जाकर बैठा और शर्मिंदगी महसूस करने लगा, माँ-बाप ने उन्हें एक नज़र देखा तो शर्म के मारे उसकी नज़रें झुक गए। माँ-बाप उसके साथ कोई बातचीत नहीं किया, न ही उन्हें नास्ता करने के लिए कहा, वो दोनों चुपचाप नास्ता करते रहे, तभी पुष्पा वहां पहुँची, सबके पास बैठ गई, और सबके साथ नास्ता करने लगी, ये देखकर हुडा के माँ-बाप नास्ता छोड़कर बिना कुछ कहे चुपचाप वहां से उठकर चले गए। हुडा को बुरा लगा वो माँ-बाप के पीछे गया उन्हें मनाने के लिए, पुष्पा आलेली बैठी रही, उसे भी अजीब महसूस हुआ, सास-ससुर की इस तरह की बर्ताव देखकर वो खामोश हो गई।

"तुमसे ग़लती हुई है पुष्पा, तुम ये स्वीकार करो, और आयेंदा कभी मोम्मी-पापा से इजाज़त लिए बिना तुम उनके सामने नहीं जाओगी" हुडा ने गुस्से में चिल्लाते हुए पुष्पा से कहा, दोनों अपनी कमरे में एक दूसरे के सामने, पुष्पा नज़रें झुकाए हुडा के सामने खामोश खड़ी सिर्फ़ हाँ में सिर हिला रही है, और बड़बड़ करके हुडा गुस्से में कमरे से बाहर चला गया, पुष्पा अकेली खड़ी रही।

घर पर टेंशन में कुर्सी पर बैठे हुडा कुछ लिख रहा है, पुष्पा उसके पास आयी,  
"कोई मुझसे बातचीत क्यों नहीं करता है?" पुष्पा ने पूछा,  
"इस घर में सब पागल है क्या? जो तुम्हारे साथ फालतू के बातचीत करके अपना  
वक्त बिताएगा" हुडा ने गुस्से में कहा,  
"मेरा मन नहीं लग रहा है" पुष्पा ने प्यार से कहा,  
"तुम्हारा मन नहीं लग रहा है तो मैं क्या करूँ?" हुडा ने गुस्से में कहा,  
"चलो न कहीं बाहर चलते हैं घूम कर आते हैं" पुष्पा ने प्यार से कहा,  
"मैं अपने काम में व्यस्त हूँ, मैं नहीं जा सकता हूँ" हुडा ने कहा, सुनकर पुष्पा  
थोड़ी सी खामोश हुई,  
"तुम अकेली जाओ, तुम्हें कोई पावंदी नहीं, जहां मर्जी जाओ घूमफिर कर आओ,  
शॉपिंग करो" हुडा ने कहा, ये सुनकर पुष्पा थोड़ी खुश हुई, और हां में सिर  
हिलाई, और हुडा उसे घूरने लगा,  
"ड्राइवर के साथ जाना, जहां जाना है उसे कह देना वो तुम्हें लेकर जाएगा" हुडा ने  
कहा, सुनकर पुष्पा और खुश हो गई, और वहां से जाने लगी, और हुडा गुस्से में  
उसे जाते देखते रह गया।

\*

अपनी बिल्डिंग के नीचे पुष्पा पार्किंग में पहुँची, मर्सिडीज में बैठी, और ड्राइवर  
नीलेश उसे लेकर जाने लगा। घर से बाहर रोड पर पहुँचा और ड्राइव करते हुए  
नीलेश ने पुष्पा से पूछा, "मैडम कहां जाना है?" सुनकर पुष्पा सोचने लगी,  
"ब्यूटी-पार्लर" पुष्पा ने कहा,  
"ओ. के, मैडम" कहकर नीलेश पुष्पा को एक ब्यूटी पार्लर के सामने ले जाकर  
गाड़ी रोका, पुष्पा ब्यूटी-पार्लर के अंदर गई, और अपनी चेहरे की मेक-अप  
करवाने लगी। मेक-अप करते हुए ककड़ी-टमाटर और भी कई सारे फल-फ्रूट  
और सब्जियां जैसे चीज़ें पुष्पा के चेहरे पर चिपकाने के बाद पुष्पा की चेहरे की  
मेक-अप पूरी की गई। चेहरे की मेक-अप पूरी होने के बाद पुष्पा की बालों की  
ट्रेसिंग होने लगी, और फाइनली पुष्पा की हेयर स्टाइल चुड़ैल जैसी बनने के बाद  
पुष्पा की ब्यूटी-पार्लर का काम समाप्त हुई।



नीलेश के साथ पुष्पा एक शॉपिंग सेंटर में पहुँची, नीलेश के साथ पुष्पा ने काफी सारे शॉपिंग किया, शॉपिंग किए हुए सभी चीजों को नीलेश ने गाड़ी पर भरा, और पुष्पा मैडम से पूछा, "मैडम, अब कहां जाना है?"

"कोई अच्छा सा रेस्टॉरेंट में" पुष्पा ने कहा,

"ओ. के. मैडम" कहकर नीलेश ने फिर से गाड़ी घुमाया, और पुष्पा को लेकर एक फाइव स्टार होटल के सामने जाकर गाड़ी रोका, पुष्पा गाड़ी से उतरी और नीलेश के साथ होटल के अंदर चली गई। नीलेश के साथ बैठी पुष्पा इटालियन पिज़्ज़ा पास्ता और भी काफी सारे खाना मंगवाई। और अपनी मोबाइल फ़ोन से सारे खाने की फोटो ली, खाने के साथ सेल्फी भी ली, और खाना कंप्लीट की।

मर्सिडीज में बैठ कर पुष्पा अपनी चॉल में अपनी माँ-बाप के घर के पास पहुँची, उसे गाड़ी से उतरते देख कर वहां सोसाइटी के सभी लोग जमा होने लगे, सब लोग आकर पुष्पा को देखने लगे और आपस में पुष्पा के बारे में खुसुर-फुसुर करने लगे, लोगों की भीड़ की घुप-गाप सुनकर उसके माँ-बाप घर से बाहर आए और उन्हें अपने घर के सामने पुष्पा दिखाई दिया और सामने लोगों की भीड़। लोग आपस में धीरे-धीरे पुष्पा के बारे में बातें कर रहे हैं, "माँ, पुष्पा ने ऐसा क्यों किया" भीड़ में खड़े एक बच्चे ने अपनी माँ से पूछा,

"उसका बाप निकम्मा है न इसलिए" माँ ने धीरे से उस बच्चे को जवाब दिया, सारी बातें पुष्पा के माँ-बाप को सुनाई दे रहे हैं,

"तुम सब भीड़ क्यों लगा रखे हो यहां?" पिताजी ने गुस्से में सबसे कहा, और उस भीड़ से एक बच्चे ने जवाब दिया, "क्यों ये जगह तुम्हारे बाप का है क्या?" ये सुनकर पुष्पा की माँ और पिताजी को नर्बस महसूस हुआ,

"मेरे घर के सामने कोई भीड़ मत लगाओ, जाओ यहां से" पिताजी ने गुस्से में कहा,

"अरे आपकी बेटी आपसे मिलने आई है, हम सब देखने आए है, आप इतना गुस्सा क्यों हो रहे हैं?" उस भीड़ से एक औरत ने कहा,

"मर गई मेरी बेटी, अब मेरी कोई बेटी नहीं है, जिसको जहां जाना है जाए मुझे किसी से कोई मतलब नहीं" पिताजी ने भावुक भाव से कहा, और रोहित और रोहित की माँ को धक्का मारकर घर के अंदर ले गया और अंदर से दरवाज़ा बंद कर दिया, ये सब देखकर और सब सुनकर पुष्पा ख़ामोश हो गई, और मुँह

लटकाये वहां से वापस आने लगी। गाड़ी पर बैठे नीलेश वहां के माहौल को नोटिस किया और चुपचाप पुष्पा को लेकर वहां से जाने लगा।

\*

पुष्पा खामोश है निराश है, बिस्तर पर अकेली लेटी-लेटी अपने माँ-बाप के बारे में सोच रही है, याद कर रही है उस पल को जब उसने अपने माँ-बाप से मिलने गयी थी। उसकी पिताजी और माँ की खामोशी और शर्मिंदगी भारी चेहरे उसे दिखाई दे रहे हैं, उनके चेहरे को याद करते-करते पुष्पा नर्बस हो रही है, क्या करूँ क्या न करूँ कुछ समझ नहीं पा रही है। कुछ पल बाद उसने हुडा को फ़ोन लगाया, फ़ोन रिंग होने लगा, पर हुडा फ़ोन नहीं उठा रहे हैं, कई बार फ़ोन करने के बाद हुडा ने फ़ोन उठाया और कहा, "आज मैं घर नहीं आ रहा हूँ, तुम मेरा इंतज़ार मत करो, खाना पीना करके सो जाओ" पुष्पा उसे कुछ कहने वाली थी कि तब-तक हुडा ने फ़ोन रख दिया, पुष्पा और ज़्यादा खामोश हो गई, खुदको अकेली महसूस करने लगी।

दूसरी रात को भी पुष्पा ने लेटे-लेटे हुडा के आने की इंतज़ार किया, काफी रात तक इंतज़ार किया, लेकिन हुडा नहीं आया।

तीसरी रात को आधी रात के बाद हुडा दारू के नशे में हिलते-डुलते हुए घर पहुँचा, वो बहुत दुखी है, टेंशन में है,

"इतनी रात को कोई घर लौटता है क्या? कहां थे दो दिन से? मैं बेसब्री से तुम्हारे इंतज़ार कर रही हूँ" पुष्पा ने प्यार से कहा,

"इंतज़ार करके मेरे ऊपर कोई बहुत बड़ा अहसान कर दिया क्या?" हुडा ने नशे में हिलते-डुलते हुए कहा,

"तुम क्यों मेरे साथ ऐसा कर रहे हो?" पुष्पा ने फिरसे प्यार से पूछा, ये सुनकर हुडा को गुस्सा आने लगा था, लेकिन वो ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा,

"मैं क्यों ऐसा कर रहा हूँ?, ज़िंदगी बर्बाद कर दी तुमने मेरी, माँ-बाप के होने बावजूद भी लावारिस बना दिया तुमने मुझे, पहले मैं लेट से घर लौटता था तो पिताजी मुझे डांटते थे, माँ मेरी फ़िक्र करती थी, मेरे इंतज़ार में बैठी रहती थी। और तेरे आने के बाद देख, दोनों मुझसे बात करना भी बंद कर दिया, मुझसे रूठ

गए, मुझे देखकर मुँह फेर लेते हैं, उनके पास जाता हूँ तो वो लोग उठकर चले जाते हैं। न कुछ कह पा रहे हैं न सह पा रहे हैं, तुम्हारी वजह से मेरी माँ-बाप घर के अंदर घूट-घुट कर मर रहे हैं, शर्म के मारे वो दोनों घर से बाहर नहीं निकल रहे हैं। घर से बाहर निकलते हैं तो लोग उनके मज़ाक उड़ाते हैं, उनपर थू-थू करते हैं। करोड़ों रुपए है मेरे पास, लेकिन मेरे माँ-बाप मुझसे खुश नहीं हैं" हुडा ने अपने आंसू पोंछते हुए कहा,

"तो तुम्हें क्या लगता है? मेरे माँ-बाप मुझसे बहुत खुश है? कल शाम को मैं गयी थी उनसे मिलने, रो रहे थे वो दोनों, और पता है पिताजी ने क्या कहा? मर गई मेरी बेटी, अब मेरी कोई बेटी नहीं है, ऐसा कहा, मुझे घर के अंदर भी नहीं घुसने दिया, मैं दरवाज़े से वापस चली आयी, लोग उनपर भी थू-थू कर रहे थे। सोचो ऐसा हालात में मेरे दिल पर इस वक़्त क्या बीत रहा होगा?" पुष्पा ने कहा, और हुडा के हाथ में हाथ रखने गया तो हुडा पुष्पा से पीछे चला गया,

"मैं समझ सकती हूँ हुडा तुम किस हालात से गुज़र रहे हो, क्योंकि तुम जिस हालात से गुज़र रहे हो, इस वक़्त मैं भी उसी हालात से गुज़र रही हूँ" पुष्पा ने प्यार से कहा,

"मैं बर्बाद हो गया पुष्पा, एक छोटी सी ग़लती के वजह से सबकुछ बर्बाद हो गया" हुडा ने कहा, कहकर जैसे वो रोने लगा, अपने आंसू पोंछने लगा,

"हमें अपनी ग़लती का अहसास हो गया न, यही हमारे लिए सबसे बड़ी प्राश्नित है, अब हम दोनों धीरे-धीरे अपनी ग़लती को सुधारेंगे, सबको मनाएंगे, दोनों मिलकर फिरसे सबकुछ ठीक कर लेंगे" पुष्पा ने कहा,

"बहुत देर हो गया पुष्पा, अब कुछ नहीं हो सकता है" कहकर हुडा जाने लगा और पुष्पा हुडा का हाथ पकड़ लिया उसे सीने से से लगाने लगी,

"मेरी भावनाओं को समझो हुडा, इस वक़्त मुझे तुम्हारी शख़्त ज़रूरत है" हुडा को सीने से लगाये पुष्पा ने कहा, और हुडा को पुष्पा पर गुस्सा आने लगा,

"ज़ख़्म बहुत गहरा है पुष्पा, सीने से लगाकर दो-चार अच्छी बातें करने से ये ज़ख़्म नहीं भरेगा" कहकर हुडा पुष्पा को धक्का मार कर साइट कर दिया, हुडा की इस हरकत से पुष्पा थोड़ी नर्बस हो गई, और हुडा गुस्से में कमरे से बाहर चला गया, पुष्पा उसे जाते देखती रह गई।

हुडा पुष्पा से नाराज़ हो कर अकेला एक कमरे में सोया है, पुष्पा फिरसे उसके पास आई और उसके बिस्तर पर लेट गई, कुछ पल हुडा को देखती रही, लेकिन हुडा पुष्पा को एक झलक भी नहीं देखा। पुष्पा हुडा को देखती रह गई और किसी चीज़ के बारे में सोचती हुई वो अपनी भावनाओं में डूब गई, पर इससे हुडा पर कुछ असर नहीं पड़ा, फिर पुष्पा हुडा को मनाने की अंदाज़ में हुडा के बदन पर हाथ रखने लगी, हुडा के सर्ट के बटन खोलने लगी, और अपनी कपड़े उतारने लगी, और कपड़े उतारकर हुडा की बांहों में सामने की कोशिश की तो हुडा को पुष्पा पर गुस्सा आ गया, और गुस्से में हुडा पुष्पा को धक्का मार कर दूर कर दिया, हुडा की इस हरकत की वजह से पुष्पा हुडा से थोड़ी नाराज़ हो गयी और हुडा को देखती रही।

दूसरी रात को आधी कपड़ों में बिस्तर पर लेटी हुई पुष्पा, बेसब्री से हुडा के आने की इंतज़ार में रहती थी, इंतज़ार करते-करते इंतज़ार की सारी हदें पार हो गए लेकिन हुडा नहीं आया। तो पुष्पा हुडा को फ़ोन लगाई, और काफी देर हुडा की मोबाइल की घंटी बजने के बाद कोई लड़की ने हुडा का फ़ोन उठाया और पुष्पा से कहा, "हुडा आज घर नहीं आ रहे हैं" हुडा के मोबाइल पर लड़की की आवाज़ सुनकर पुष्पा को गुस्सा आ गया, और गुस्से में उसने नीलेश को फ़ोन लगाया, "जी मैडम, इतने रात को फ़ोन किया अपने?" नीलेश ने कहा, "तुम्हें पता है हुडा इस वक़्त कहां है?" पुष्पा ने कहा, "ये तो नहीं पता, पर इस वक़्त हुडा साहब कहां होते हैं ये मुझे पता है" "तो जल्दी से घर से निकलो और गाड़ी निकालो, मुझे हुडा के पास जाना है" "ओ. के. मैडम" कहकर नीलेश जल्दी-जल्दी घरसे निकलने लगा,

\*

रात के वक़्त नीलेश और पुष्पा एक डिस्को में पहुँचे, वहां लोगों की काफी भीड़ और तेज़ी से डीजे बज रहा था, सब नशे में झूम रहे थे, वहां का माहौल रोमांचक था,

"हुडा साहब इधर ही आकर दारू पीते हैं" नीलेश ने कहा, "तो फिर वो यहीं कहीं होना चाहिए, ढूंढो उसे" कहकर पुष्पा लोगों के बीच जा कर हुडा को ढूंढने लगी, नीलेश भी ढूंढने लगा, दोनों पूरे डिस्को में हुडा को ढूंढने

लगे, ढूँढते-ढूँढते पुष्पा ने हुडा को फ़ोन भी किया, लेकिन हुडा ने फ़ोन भी नहीं उठाया, फ़ोन नहीं उठाने से पुष्पा को गुस्सा आ गया, गुस्से में वो हुडा को ढूँढते हुए पीने लगी, दो तीन ग्लास पी गई। थोड़ी देर में उसका सिर भारी होने लगा उसे चक्कर आने लगा उसे नशा चढ़ने लगा, नशे में वो और ज़्यादा पी गई, तभी एक लड़का उसके पास आकर उससे चिपककर नाचने लगा उसकी बदन पर हाथ लगाने लगा, पुष्पा मना करने लगी, लेकिन वो लड़का भी नशे में है उसे होश नहीं, वो पुष्पा को पकड़कर डांस किये जा रहे हैं। लोगों के बीच हुडा को ढूँढते हुए नीलेश की नज़र पुष्पा पर पड़ी, उसने देखा एक लड़का पुष्पा को पकड़कर ज़बरदस्ती पुष्पा के साथ डांस कर रहा है, पुष्पा मना कर रही है पर लड़का नहीं मान रहा है वो पुष्पा को पकड़कर उसके साथ डांस किये जा रहे हैं, ये देख कर नीलेश गुस्से में पुष्पा के पास आया और उस लड़के को धक्का मार कर पुष्पा से दूर कर दिया। पुष्पा से दूर जा कर वो लड़का किसी और लड़की के साथ डांस करने लगा, पुष्पा भी अपने आपको संभाल नहीं पा रही है, वो नशे में वो झूम रही है, ये देखकर नीलेश उसके आसपास ही घूमता रहा। किसी को पुष्पा के पास नहीं आने दिया। थोड़ी देर में पुष्पा पूरी तरह से टल्ली हो गई, डांस करते-करते नीचे ज़मीन पर गिरने लगी, और नीलेश पुष्पा का हाथ पकड़ कर उसे वहां से लेकर जाने लगा, तो पुष्पा मना करने लगी, उसे घर जाने का मन नहीं है, लेकिन नीलेश उसकी बात नहीं सुना, वो पुष्पा का हाथ पकड़कर उसे बाहर लेकर आया, गाड़ी पर बैठाया और गाड़ी स्टार्ट किया, और पुष्पा को लेकर जाने लगा।

"ये तू क्यों लेकर आया मेरेको? तेरेको क्या लगा मेरेको चाड गई है?" रोड पर चलती गाड़ी में बैठे पुष्पा ने नीलेश से पूछा, पुष्पा नीलेश के बजुवाला सीट पर बैठी है,

"नहीं, इतनी रात को आप यहां सुरक्षित नहीं है" ड्राइव करते हुए नीलेश ने कहा, "किसको सुरक्षित रहने का है? साला वो बर्बादी का बहाना करके हर रोज नई-नई लड़कियां बदल रहे हैं, और मैं चार दीवारी के अंदर घुट-घुट कर मर रही हूँ, नहीं रहने का है मुझे सुरक्षित, चल तू वापस ले जाकर मुझे वहां छोड़ दे" पुष्पा ने कहा, नीलेश ने कोई जवाब नहीं दिया वो चुपचाप ड्राइव करता रहा, और पुष्पा खिड़की से बाहर आते-जाते लोगों को देखने लगी, और मस्ती करने लगी "ये रुक-रुक" किसी को रोड पर चलते देख कर पुष्पा ने कहा, लेकिन नीलेश नहीं सुना वो अपने धुन में गाड़ी चलाता रहा,

"तू गाड़ी क्यों नहीं रोका?" पुष्पा ने पूछा,

"एक नंबर का लुक्खा है वो, उसे देखकर मैं गाड़ी रोक्कूँ?" नीलेश ने कहा, सुनकर पुष्पा को थोड़ी हंसी आ गया। और वो नीलेश के साथ मस्ती करने लगी, नीलेश को छेड़ने लगी, नीलेश की बदन पर हाथ लगाने लगी, नीलेश को धक्का भी मारने लगी, पर इससे नीलेश पर कोई असर नहीं हुआ, और हुडा को छेड़ने की अंदाज़ में फिर से रोड पर किसीको चलते देख कर कहा, "गाड़ी रोक, गाड़ी रोक" पर नीलेश ने गाड़ी नहीं रोका,

अब क्या हुआ?" पुष्पा ने पूछा,

"होटल वाला था वो, मैं उसे जनता हूँ, अभी इतनी रात को काम से छूट कर घर जा रहा है, बेचारा बहुत थक गया होगा, क्यों परेशान करने का ऐसे लोगों को?" नीलेश ने कहा, और थोड़ी देर बाद, "देख वो जो एक जन जा रहा है न, तू उसके पास जाकर गाड़ी रोक देना" किसीको दूर रोड पर पैदल चलते देखकर पुष्पा ने कहा, लेकिन नीलेश उसके पास जाने के बाद भी गाड़ी नहीं रोका,

"तेरेको प्रॉब्लम क्या है? तू गाड़ी क्यों नहीं रोक रहा है? किधर लेकर जा रहा है तू मेरेको?" पुष्पा ने कहा, नीलेश इस बार भी कोई जवाब नहीं दिया, वो चुपचाप गाड़ी चलता रहा, तो पुष्पा नीलेश को देखकर मुस्कुराने लगी, और नीलेश के साथ फिरसे मस्ती करने लगी, नीलेश के बदन पर हाथ लगाने लगी, नीलेश को परेशान करने लगी, कुछ पल के लिए नीलेश पुष्पा की हरकतों से परेशान हो गया।

सुबह-सुबह पुष्पा की आँख खुली तो वो अपने आपको बिना कपड़ों में किसी होटल के कमरे में पाया, ये देखकर वो चौंक गई, आश्चर्य हो गई, तभी नीलेश नहाधोकर बाथरूम से बाहर निकला, उसे देखकर पुष्पा समझ गई कि रात को मेरे साथ क्या हुआ, ये सोचकर पुष्पा खामोश हो गई।

\*

नीलेश चुपचाप ड्राइव कर रहा है, और पीछे सीट पर खामोश सी पुष्पा चुपचाप बैठी है, वो मायूस है उसकी चेहरे बता रही है कि वो मन ही मन रो रही है। पुष्पा को लेकर नीलेश एक समुंदर के बीच के पास पहुँचा और गाड़ी रोका, ये देखकर

पुष्पा नीलेश को देखती रही, नीलेश के चेहरे पर खुशी के रौनक है वो बहुत खुश है,

"हम तो घर जानेवाले थे न?" पुष्पा ने पूछा,

"हां चलेंगे, इतनी जल्दी क्या है? बैठते हैं, थोड़ी देर आराम करते हैं" नीलेश ने कहा, और गाड़ी से उतारकर समुंदर के पानी के पास जाकर रेत पर बैठ गया, और पुष्पा गाड़ी पर बैठी नीलेश को देखती रही और उसे देख देखकर कुछ सोचती रही वो टेंशन में आने लगी और टेंशन में गाड़ी से उतरकर नीलेश के पास जाकर बैठ गई, वहां का माहौल गोआ के बीच के जैसे रोमांचक था। चारों ओर नज़रें घुमाकर देखने के बाद नीलेश पुष्पा को देखने लगा, पुष्पा भी उसे देखती रही,

"तुम्हारा दिमाग खराब है?" पुष्पा ने पूछा, और नीलेश ने हां में सिर हिलाया,

"क्या तुम पागल हो?" पुष्पा ने पूछा, और नीलेश मुस्कुराते हुए फिरसे हां में सिर हिलाया,

"तुम्हारे पास दिमाग नहीं है?" पुष्पा ने पूछा, नीलेश न में सिर हिलाया, ये देखकर पुष्पा ने और कुछ नहीं पूछा, वो नीलेश को देखती रही, और नीलेश को हंसी आ गया, लेकिन पुष्पा सिरियस है, वो टेंशन में नीलेश को देखे जा रही थी, ये देखकर नीलेश का हंसी बंद हो गया, और वो भी सिरियस होकर पुष्पा को देखते रह गया,

"तुम्हें हंसी नहीं आता है क्या?" नीलेश ने पूछा, तो पुष्पा ने भी न में सिर हिलाइ, ये देखकर नीलेश कुछ पल के लिए, चुपचाप हो गया, थोड़ी देर बाद पुष्पा को हंसाने के लिए उसे गुदगुदी करने लगा तो पुष्पा को हंसी आ गया, कुछ देर तक दोनों हंसते रहे, हंसने के बाद पुष्पा फिरसे खामोश हो गई,

"हम बहुत गलत कर रहे हैं नीलेश" पुष्पा ने कहा,

"हम क्या गलत कर रहे हैं? हम तो सिर्फ हंस रहे हैं, हंसना भी गलत है क्या?" नीलेश ने पूछा,

"नहीं हंसना गलत नहीं, पर हम जो कर रहे हैं वो गलत है" पुष्पा ने कहा,

"इसमे गलत की क्या बात है? तुम मुझसे खुश हो मैं तुमसे खुश हूँ, बस कहानी खत्म भाड़ में गया सही और गलत, और भाड़ में गया तुम्हारा पति" नीलेश ने कहा, कहकर पुष्पा को देखता रहा, और उसकी खामोशी भारी चेहरे को देखकर

फिरसे ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा, पुष्पा और भी सिरियस होने लगी, उसे देखकर फिरसे नीलेश की हंसी बंद हो गया,

"देखो पुष्पा, जब तक तुम मेरे साथ रहोगी तब तक तुम्हें मेरा एक रूल मानकर चलना पड़ेगा, रूल ये है कि तुम्हें हर वक़्त हंसते रहना पड़ेगा, ठीक है?। चलो अब ज़रा हंसकर दिखाओ" नीलेश ने कहा, फिरभी पुष्पा मुँह लटकाये बैठी है, "तुम हंसोगी? या फिर मैं अपने हरकतें शुरू करूँ?" कहकर नीलेश जोकर जैसे शकल बना कर पुष्पा को देखती रही, पुष्पा को हंसी आ गया, दोनों बहुत ज़ोर-ज़ोर से हंसे, और काफी देर तक हंसते रहे, हंसते-हंसते जैसे पुष्पा की आँखों में आंसू आ गया, वो फिर ख़ामोश हो गयी, कुछ देर तक नीलेश उसे देखते रहे गया, उसे देखते-देखते नीलेश भी सिरियस हो गया,

"तुमने ऐसा क्यों किया पुष्पा?" नीलेश ने पूछा, पुष्पा ने कोई जवाब नहीं दिया, "तुम भलेही मुझे कुछ न कहो, पर मैं सब जानता हूँ, न ही तुम्हें हुडा से प्यार था, और न ही हुडा को तुमसे, मैं ये भी जनता हूँ कि तुमने पैसे की लालच में आकर हुडा को फंसाया, और ज़बरदस्ती हुडा से शादी किया, तुम्हारी शादी से न ही तुम्हारे माँ-बाप खुश है और न ही तुम दोनों, बताओ ऐसा क्यों किया?" नीलेश ने पूछा, ये सुनकर पुष्पा अपनी भावनाओं में डूबने लगी खुदको संभाल नहीं पाई वो रोने लगी,

"मैं भटक गई थी नीलेश, पैसे की लालच में आकर मैं पागल हो चुकी थी" पुष्पा ने रोते हुए कहा,

"तो अब तुम्हें अपनी ग़लती का अहसास हो गया?" नीलेश ने कहा,

"आज नहीं, उसी दिन मुझे अपनी ग़लती का अहसास हो गया था, जिस दिन मैं अपनी माँ-बाप से दूर हो रही थी" पुष्पा ने कहा,

"तो अब क्या करोगी? अब तो तुम दोनों तरफ से फंस चुकी हो, न माँ-बाप तुम्हारे साथ है न तुम्हारे पति तुम्हारे साथ है" नीलेश ने कहा,

"ग़लती मैंने किया तो मुझे ही भुगतना पड़ेगा" पुष्पा ने कहा,

"तुम्हारे पास अब भी एक रास्ता है, जिससे तुम अपनी ग़लती सुधार सकती हो" नीलेश ने कहा,

"बताओ क्या है वो रास्ता?" पुष्पा ने पूछा,



"रास्ता ये है कि तुम मेरे साथ भाग चलो" नीलेश ने कहा, ये सुनकर पुष्पा कुछ पल के लिए जैसे आश्चर्यजनक रही और नीलेश को देखती रही,

"नहीं नहीं ये ग़लत है, वैसे ही ग़लती कर-करके मैं ग़लती की एक पुतला बन चुकी हूँ, अपनी हाथों से अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर चुकी हूँ, सबकुछ खो चुकी हूँ, माँ-बाप से दूर हो चुकी हूँ, अब जानबूझकर और ग़लती नहीं कर सकती हूँ" पुष्पा ने कहा,

"तो ऐसे हालात में तुम क्या करने को सोच रही हो? क्या उस घरके चार दीवारी के अंदर घुट-घुट कर अपनी जान दोगी? या फिर आत्महत्या करोगी?" नीलेश ने पूछा,

"आत्महत्या नहीं करूँगी, धीरे-धीरे मैं अपनी सारी ग़लतियों को सुधारूँगी, सबको मनाऊँगी" पुष्पा ने कहा,

"पुष्पा, तुम रो रोकर उस घर के लोगों के सामने अगर मर भी गयी न, तब भी वो लोग तुम्हें अपनी बहु स्वीकार नहीं करेंगे" नीलेश ने कहा, पुष्पा उसे देखती रही,

"तुम कुछ भी हो जाये नीलेश, लेकिन मैं जानबूझकर ऐसी और कोई ग़लती नहीं करूँगी" पुष्पा ने कहा,

"तुमने ग़लती कर-करके अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर दिया, और जब ज़िंदगी बर्बाद कर ही दिया, तो एक और ग़लती करो, अपनी ज़िंदगी को सुधारने के लिए" नीलेश ने कहा, सुनकर पुष्पा न में सिर हिलाइ,

"नहीं अब और कोई ग़लती नहीं करूँगी, और न ही तुम्हारे बातों में आऊँगी, इससे तुम अगर मुझसे नाराज़ भी हो गए तो कोई बात नहीं, अगर मुझे घर तक नहीं भी छोड़ना चाहते हो तो भी कोई बात नहीं, मैं ऑटो करके चली जाऊँगी, बाय-बाय" कहकर पुष्पा उठकर वहां से जाने लगी,

"अरे मेरी पूरी बात तो सुनो, मैंने कब कहा कि मैं तुम्हें घर तक नहीं छोड़ूँगा" नीलेश ने कहा, पर पुष्पा सुनी नहीं वो चली गयी, और नीलेश बड़बड़ाते हुए उसके पीछे जाने लगा, "ये लड़कियां ऐसी क्यों होती है? अपनी दिमाग का इस्तेमाल क्यों नहीं करते हैं? ओह मैं तो भूल ही गया था, लड़कियों के पास दिमाग होता ही नहीं" ऐसा बड़बड़ करते हुए नीलेश भी उसके पीछे-पीछे चले गए।

रोड पर नीलेश बड़बड़ करते हुए ड्राइव कर रहा है, और पीछे सीट पर पुष्पा चुपचाप बैठी है,

"हुआ? दिमाग ठंडा हुआ?" ड्राइव करते हुए नीलेश ने पूछा, पुष्पा ने कोई जवाब नहीं दिया,

"मैंने तुम्हें कुछ ग़लत सलाह दिया क्या?"

"बहरी हो क्या?"

"मैं कुछ कह रहा हूँ"

"तुम लड़कियां किसीकी बात सुनती क्यों नहीं हो?" नीलेश कहता रहा, लेकिन पुष्पा ने कोई जवाब नहीं दिया,

"मैं सच कह रहा हूँ यार, मुझे तुमसे सच्चे दिल से प्यार हो गया, मेरे साथ भाग चलो मैं तुम्हें बहुत खुश रखूँगा, ज़िंदगी में कभी किसी चीज़ की कमी नहीं होने दूँगा, ज़िंदगी भर तुम्हारी सेबा करूँगा" नीलेश ने कहा, पुष्पा इस बार भी कोई जवाब नहीं दिया, वो चुपचाप बैठी है,

"देख अगर तू मेरे साथ भाग कर नहीं गयी न, तो मैं भी तेरा पीछा नहीं छोड़ूँगा, ज़िंदगी भर मैं तेरी ड्राइवरी करता रहूँगा, जब तक है जान" नीलेश ने कहा, सुनकर पुष्पा को थोड़ी हंसी आई, तब तक गाड़ी घर के पास पहुंच चुका था, घरके सामने पुष्पा गाड़ी से उतरने की कोशिश की तो नीलेश पुष्पा को परेशान करने के लिए गाड़ी का गेट को लॉक कर दिया, पुष्पा उतर नहीं पाई, पुष्पा को लेकर नीलेश पार्किंग में चला गया, गाड़ी पार्क किया और पुष्पा के गेट के पास आकर गेट खोला और पुष्पा गाड़ी से उतरी और घर के अंदर जाने लगी तो नीलेश ने पुष्पा का रास्ता रोक लिया,

"तुम हंसोगी या फिर मैं तुम्हें हंसाने के लिए कोई दूसरा रास्ता निकलूं?" नीलेश ने पूछा, और पुष्पा नीलेश को साइट करके भाग कर किसी तरह घर के अंदर चली गयी, नीलेश उसे जाते देखते रह गया। पार्किंग के किसी कोने में दूर खड़ी पुष्पा की सासूमाँ इन दोनों का उस तरह के हरकतें देखकर आश्चर्य हो गई।

\*

शाम के वक़्त घर के अंदर हुडा अपने माँ के सामने नज़रें झुकाए खड़े हैं, और माँ गुस्से में हुडा पर चिल्ला रही है, "बाहर घूमना-फिरना थोड़ा कम कर दो बेटा, और घर की हालत पर थोड़ा ध्यान दो" माँ ने गुस्से में कहा, हुडा ने कोई जवाब नहीं दिया, वो मुँह लटकाये माँ के सामने खड़ा रहा,

"अपनी घर की हालात को सुधारने के लिए मैं तुम्हें एक और मौका देती हूँ हुडा, जल्द से जल्द अपने घर और घर के लोगों को सुधारो, नहीं तो तुम लोग ही इस घर पर रहोगे" माँ ने गुस्से में कहा,

"माँ घर छोड़कर जाने की बात क्यों करती हो? मैं हूँ न, आप प्लीज़ शांत हो जाइए, मैं सबको संभाल लूँगा, आप जाइये अपनी कमरे में, आराम कीजिये" हुडा ने कहा,

"और उस दो कौड़ी के ड्राइवर से भी कहदो अपनी घर की इज़्ज़त के साथ खिलवाड़ न करें, नहीं तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा" कहकर माँ नराज़गी के साथ वहां से चली गयी, माँ के जाने के बाद हुडा को गुस्सा आ गया।

ड्राइवर के कमरे में नीलेश खाना खा रहा था, हुडा गुस्से में वहां पहुँचा और नीलेश के हाथ से खाना छीनकर फेक दिया, और नीलेश का कोलर पकड़ लिया, "जिस थाली में खाया उसी थाली को छेद किया, गद्दार" कहकर हुडा नीलेश को मारने लगा, मारते-मारते उसे ड्राइवर के कमरे से बाहर लेकर आने लगा, पुष्पा के पास लेकर आया और पुष्पा के सामने उसे मारने लगा, ये देखकर पुष्पा रोने लगी,

"कुत्ते, बोल और इस घर की इज़्ज़त पर नज़र डालेगा? बोल और इस घर की इज़्ज़त के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश करेगा, बोल" इस तरह के बातों से हुडा नीलेश को क़बुलाते-क़बुलाते मरता रहा, मारते-मारते जब थक गया तब डंडे से नीलेश को मारने लगा, "आज तुझे नहीं छोड़ूँगा, आज मैं तुझे मार-मार कर तुझे तेरी औकात याद दिलाऊँगा, जान" कहते हुए हुडा उसे मारता रहा, और नीलेश चुपचाप मार खाता रहा, नीलेश के नाक से मुँह से खून बहने लगा, फिरभी हुडा उसे मारता गया, ये देखकर पुष्पा को और रहा नहीं गया, वो आकर हुडा का पैर पकड़ लिया,

"प्लीज़ इन्हें छोड़ दीजिए, इसमें इसका कोई ग़लती नहीं है" हुडा के पैर पकड़े हुए पुष्पा कहने लगी, और हुडा नीलेश को मारना बंद कर दिया, वो पुष्पा पर गौर किया, पुष्पा की बातें सुनने लगा,

"ग़लती मेरी है, जो सज़ा देना चाहते हैं आप मुझे दीजिए, मैं भुगतने को तैयार हूँ, जितना मरना चाहते हैं आप मुझे मारिये, मैं मार खाने के लिए तैयार हूँ" इतना सुनकर हुडा को पुष्पा पर बड़ी तेज़ गुस्सा आया, वो नीलेश को छोड़ दिया और पुष्पा को लात मार दिया, पुष्पा नीचे ज़मीन में गिर गई, और हुडा गुस्से में पुष्पा की बाल पकड़कर उसे उठाया, और उसे मारने के लिए हाथ ऊपर किया, तो

नीलेश ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "बस, बहुत हो गया" नीलेश ने कहा, ये सुनकर हुडा आश्चर्य हो गया, नीलेश को गौर से देखता रह गया, और पुष्पा रो रही है, "अब तक मैं सिर्फ़ इसलिए चुपचाप जुल्म सहता रहा, क्योंकि मैं बचपन से इस घर में पला बड़ा हूँ, सालों से मैं इस घर का नमक खाया हूँ, इस घर का बहुत अहसान है मुझपर, इसलिए अब तक चुप रहा, लेकिन तुमने मेरी बर्दाश्त की सारी हदें पार कर दिया, तुमने औरत पर हाथ उठाया, जो मेरी बर्दाश्त से बाहर है" नीलेश ने कहा, सुनकर हुडा को और ज़्यादा गुस्सा आ गया,

"अच्छा? तो तू मुझे रोकेगा?" हुडा ने कहा,

"हां मैं तुम्हें रोक्ूंगा" नीलेश ने कहा,

"तो रोककर दिखा मुझे" हुडा ने कहा,

"तू हाथ उठाकर तो दिखा" नीलेश ने कहा,

"ले हाथ उठाया" कहकर हुडा पुष्पा की गाल पर थप्पड़ मारने जा रहा था की नीलेश हुडा का हाथ पकड़ लिया,

"ज़्यादा इतराओ मत सेठ, नहीं तो आज अपने ड्राइवर के हाथों से पिटोगे, और बहुत बुरी तरह से पिटोगे, इतना पिटोगे की ज़िंदगी भर इस ड्राइवर को भूल नहीं पाओगे" हुडा का हाथ पकड़े हुए नीलेश गुस्से में कहा, और हुडा को घूरता रहा,

"तेरा ये हिम्मत तू? कि तू मुझपर हाथ उठाया?" हुडा ने कहा,

"अभी तो सिर्फ़ हाथ रोका हूँ, जब हाथ उठाऊंगा तो सीधा ज़मीन में गिरोगे" नीलेश ने कहा, कहकर ज़ोर से हुडा का हाथ झटक दिया हुडा जगह से हिल गया, और गुस्से में अपनी जेब से कुछ पैसे निकाल कर नीलेश के मुँह पर फेक दिया,

"निकल जा इस घर से, अभी और इसी वक़्त, तुझ जैसे नौकरों की इस घर में कोई जगह नहीं है" हुडा ने कहा, तो नीलेश और ज़्यादा गुस्सा आ गया, एक झलक वो पुष्पा को देखा, और हुडा को गुस्से में देखते हुए वहां से जाने लगा,

"अब देखता हूँ, कौन रोकता है मुझे" जाते हुए नीलेश को सुनाकर हुडा ने कहा और पुष्पा को मरने लगा, ये देखकर नीलेश रुककर हुडा को गुस्से में देखने लगा,

"तुम चले जाओ यहाँ से, ये हमारा पति-पत्नी का मामला है" हुडा से मार खाते हुए पुष्पा ने नीलेश से कहा, और नीलेश अपने आँखों से आंसू पोंछने लगा, और आंसू

पोंछते हुए वहां से चला गया, हुडा पुष्पा को मरता रहा, पुष्पा नीचे ज़मीन में गिर गई फिरभी हुडा उसे लातों से मारता रहा।

\*

टेंशन में नीलेश अपने घर पर बैठे कुछ सोच रहा है, अकेले-अकेले बड़बड़ कर रहा है, हुडा को गाली दे रहा है, उसे गुस्सा भी आ रहा है पर क्या करूँ क्या न करूँ कुछ समझ नहीं पा रहा है।

रात के वक़्त नीलेश अकेला अपने कमरे में सोया है, वो काफी टेंशन में है, मन ही मन कुछ सोच रहा है उसे नींद नहीं आ रहा है। कुछ सोचते हुए वो बिस्तर से उठकर बैठा और अपने मोबाइल से पुष्पा को फ़ोन लगाया।

पुष्पा की हालत बहुत खराब है, मार खा कर वो अधमरी की तरह बिस्तर पर पड़ी है, उसका फ़ोन बजने पर वो किसी तरह फ़ोन उठाई, और नीलेश को कुछ कहने वाली थी कि वो रोने लगी,

"बहुत मारा है उसने तुम्हें, मैं जानता हूँ" नीलेश ने कहा,

"नहीं, बहुत ज़्यादा भी नहीं, थोड़ा, तुम जब तक थे तब तक, अब सब ठीक है, तुम फ़िक्र मत करो, मैं ठीक हूँ" किसी तरह रोना बंद करके पुष्पा ने कहा,

"मैं उसे छोड़ूँगा नहीं, बदला लूँगा" नीलेश ने कहा,

"तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे, अगर तुम ज़िंदगी में अगर किसी से सच्चे दिल से प्यार किया तो तुम्हें उसकी कसम" पुष्पा ने कहा,

"तुम ऐसा क्यों कर रही हो? क्यों तुम उस गुंडे के हाथों से अपने आप को ख़त्म कर रही हो" नीलेश ने पूछा,

"वो मेरा पति है, और मैं उसकी पत्नी हूँ, मैं अपने पति से दिलों जान से प्यार करती हूँ, और मुझे मेरा प्यार पर पूरा भरोसा है, मेरा प्यार एक दिन उसे सुधार देगा, उसे एक अच्छा इंसान बना देगा, फिर सबकुछ ठीक हो जाएगा" पुष्पा ने कहा,

"ग़लत सोच रही हो तुम, वो इंसान कभी नहीं सुधरेगा, वो आज जैसा है बीस साल बाद भी वैसा ही रहेगा, तुम्हें बर्बाद कर देगा, तुम्हारी ज़िंदगी को नर्क बना देगा। आज भी तुम्हारे पास वक़्त है, तुम अपनी ज़िंदगी बर्बाद होने से बचा लो, मेरी बात

मानो मेरे साथ भाग चलो, सारी खुशियां तुम्हारी इंतज़ार कर रही हैं" नीलेश ने समझाने के अंदाज़ में कहा, लेकिन पुष्पा नहीं मानी,

"हुडा मेरा पति है, और मुझे अपने पति से प्यार है, और अपने पति को सही रास्ते पर लाने के लिए मैं अपनी ज़िंदगी को नर्क बनाने के लिए भी तैयार हूँ, इससे ज़्यादा मुझसे और कुछ उम्मीद मत करो, और अगर मेरी खुशी चाहते हो तो हमेशा-हमेशा के लिए मुझसे दूर चले जाओ" कहकर पुष्पा ने फ़ोन रख दिया, फ़ोन रखकर वो रोने लगी। नीलेश को टेंशन होने लगा, वो फिरसे पुष्पा को फ़ोन लगाया, तो पुष्पा का मोबाइल स्विच ऑफ़ बता रहे हैं, हुडा और ज़्यादा टेंशन में आ गया, टेंशन में आकर भी क्या कर सकता है? वो चुपचाप बैठा रह गया।

\*

टेंशन में किसी क्लब में बैठे हुडा दारू पी रहे हैं, और मुँह लटकाये नीलेश वहां पहुँचा और हुडा के सामने जाकर खड़ा हो गया, उसे देखकर हुडा और टेंशन में आ, वो पीना बंद करके नीलेश देखता रह गया,

"क्या हुआ रे, तेरेको मैं नौकरी से निकाल दिया न? तू इधर क्यों आया?" हुडा ने पूछा,

"भाई, आप से माफ़ी मांगने आया हूँ" नीलेश ने कहा, ये सुनकर हुडा आश्चर्य हो गया,

"कल जो आपके और मेरे बीच जो हुआ वो बहुत ही ग़लत हुआ भाई, मुझे आपके साथ उस तरह के बर्ताव नहीं करना चाहिए था" नीलेश ने प्यार से कहा, सुनकर हुडा कुछ पल सोचा, और फिर हंसने लगा, कुछ देर तक वो हंसता रह गया, आसपास में बैठे सभी लोग हुडा और उसके सामने खड़े नीलेश को देखने लगे,

"लेकिन सिर्फ़ हम दोनों की ग़लती नहीं इसमें आपका भी ग़लती है" नीलेश ने कहा, सुनकर जैसे हुडा नीलेश की बातों का मज़ाक उड़ाने लगा, वो फिरसे ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा, और कुछ देर बाद हंसना बंद कर दिया,

"तू पहले जैसा नहीं रहा नीलेश, तू बदल गया, मुझे ऐसा क्यों लग रहा है तुझे प्यार हो गया, है न?" हुडा ने कहा, नीलेश ने कोई जवाब नहीं दिया, उसने नज़रें झुका लिया,

"जा, भागकर ले जा उसे" हुडा ने नीलेश का मज़ाक उड़ाने की अंदाज़ में कहा,

"बोला था, पर वो नहीं सुन रही है" नीलेश ने कहा,  
"क्यों" हुडा ने पूछा,  
"उसे आपसे प्यार हो गया है" नीलेश ने कहा,  
"तो पड़ा रहने दे किसी कोने में, ज़रूरत पड़ी तो कभी यूज़ कर लूंगा" हुडा ने कहा,  
"नहीं भाई" नीलेश ने कहा,  
"नहीं भाई? इतना अच्छा मौक़ा मिला तुझे, वो भी तेरे हाथ से निकल गया, अब क्या करूँ मैं?, क्या चाहता है तू मुझसे?" हुडा ने पूछा,  
"मैं चाहता हूँ आप सुधर जाओ, उसे मरना पीटना बंद कर दो, उसे एक अच्छी ज़िंदगी दो" नीलेश ने कहा, ये सुनकर हुडा सिरियस हो गया,  
"नहीं तो?" हुडा ने पूछा,  
"नहीं तो क्यों फ़ालतू में रिश्तों के बंधन में आप उसे बांध कर रखे हो? डिवोर्स दे दो, मुक्त कर दो उसे अपनी नकली पति-पत्नी के रिश्ते से, कम से कम उसकी बाकी की ज़िंदगी तो बर्बाद होने से बचेगा" नीलेश ने कहा, ये सुनकर हुडा को गुस्सा आ गया,  
"इतनी जल्दी मुक्त नहीं करूँगा उसे, तड़पा-तड़पा कर मरूँगा, हर रोज़ रूलाऊँगा, एक-एक करके उसकी ज़िंदगी जीने की सारी उम्मीदें ख़त्म कर दूँगा, उसकी ज़िंदगी को जहन्नम बना दूँगा। ज़िंदगी बर्बाद की है उसने मेरी" हुडा ने गुस्से में कहा,  
"नहीं भाई आप ग़लत कर रहे हो, मैं ऐसा नहीं होने दूँगा, माना कि उसने ग़लती किया, लेकिन उसे अपनी ग़लती का अहसास है" नीलेश ने कहा,  
"सिर्फ़ ग़लती का अहसास होना काफी नहीं है नीलेश बेटा, उसने जो ग़लती किया उसे उसकी सज़ा मिलना भी बहुत ज़रूरी है" हुडा ने कहा,  
"और आपका, आपका क्या? उसके साथ-साथ ग़लती तो अपने भी किया है, आपको कौन सी सज़ा मिलनी चाहिए?" नीलेश ने कहा, सुनकर हुडा हंसने लगा,  
"हा हा हा, मुझे कौन सज़ा देगा, मैं तो किंग हूँ, किसी मइके लाल में दम है कि वो किंग को सज़ा दिलाएँ" हुडा ने हंसते हुए कहा,  
"मैं सज़ा दूँगा आपको" नीलेश ने कहा,

"तू सज़ा देगा मुझे?" कहकर हुडा ने नीलेश को धक्का मार दिया, और फिर गुस्से में नीलेश के सामने खड़ा हो गया,

"चल सज़ा दे, मैं अभी जाकर मार-मार कर उसकी दांत तोड़ दूंगा, तू मुझे उसकी सज़ा दे" हुडा ने कहा, नीलेश उसे देखता रह गया, तो हुडा ने नीलेश को फिरसे धक्का मार दिया। क्लब में बैठे सभी लोग दोनों को देखने लगा, "चल दे न सज़ा, देख क्या रहा है" हुडा ने कहा, नीलेश को गुस्सा आने लगा,

"हाथ मत लगाओ भाई, मैं बात कर रहा हूँ न, तो तुम भी बात करो, धक्का क्यों मार रहे हो?" नीलेश ने कहा, ये सुनकर हुडा फिरसे उसे धक्का मार दिया,

"क्या कर लेगा तू? मारेगा मेरेको? चल मार न" कहकर हुडा फिरसे नीलेश को धक्का मारा तो गुस्से में नीलेश भी हुडा को धक्का मार दिया, हुडा को गुस्सा आ गया और गुस्से में वो नीलेश को मारने लगा, नीलेश भी हुडा को मारने लगा, वहां दोनों की लड़ाई हिने लगा, कांच के गिलास फेक-फेककर दोनों एक दुसरे को मारने लगा, पब्लिक भागम दौड़ करने लगा, और दोनों की लड़ाई में नीलेश गुस्से में हुडा के सिरपर कुर्सी पटका हुडा नीचे ज़मीन में गिर गया, फिर भी नीलेश नहीं रुका वो हुडा के सिरपर कुर्सी पटकता रहा, हुडा का सिर फट गया उसकी नाक मुँह से खून बहने लगा, हुडा का मौत हो गया, पब्लिक शोर मचाते हुए क्लब से बाहर भागने लगा, "अरे मर्डर हो गया क्लब के अंदर" ऐसा चिल्लाते हुए लोग वहां से भाग गया, और तभी पुलिस वहां पहुँचे, और नीलेश को पकड़कर ले गए।

\*

घर पर हुडा के माँ-बाप गुमसुम और निराश हो कर कुर्सी पर बैठे हैं, और खामोशी भारी चेहरे में पुष्पा उनके सामने खड़ी है, पुष्पा के पास समान से भरा उसका बैग रखा है,

"बेटी पुष्पा, हमने फैसला किया कि तुम जिस तरह से इस घर में आये थे, उसी तरह इस घर से चले जाओ" सासूमाँ ने कहा, और पुष्पा कुछ कहने वाली थी कि सासूमाँ ने हाथों से इशारा किया कि वो कुछ न कहे, ये देखकर पुष्पा भावुक हो गई और हाँ में सिर हिलाकर बैग उठाई और चुपचाप घर से निकल गयी,



सुनसान रास्ते के किनारे पर एक टूटी-फूटी बस स्टॉप के पास अकेली बैठी पुष्पा बड़ी गंभीरता से सोच रही है, "आज पति को भी खो दिया, एक चाहने वाला था, वो भी जेल चला गया, माँ-बाप के पास भी नहीं जा सकती हूँ, अब जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?"

समाप्त